मन्त्रीश्वर कल्पक

लेखक —
नरेन्द्र सिंह जैन

प्रकाशक —
पण्डित काशीनाथ जैन
अध्यक्ष—आदिनाथ हिन्दी-जैन साहित्य माला
पो० बम्बोरा (उदयपुर राजस्थान)
७, खेलात घोष लेन, कलकत्ता-६

[सन् १९६५] [मूल्य ७५ पैसे

साहित्य मालाके संरक्षक और सभासदों की
नामावली

संरक्षक— माननीय बाबू श्री श्रीपतसिंहजी दूगड

आजीवन सभासद

नाम	स्थान
श्रीयुत् लक्ष्मीचन्दजी धन्नालालजी करणावट	कलकत्ता।
,, ,, धन्नालालजी सोहनलालजी करणावट,	कलकत्ता।
,, ,, पन्नालालजी विजयसिंहजी करणावट	कलकत्ता।
धनराजजी उमरावसिंहजी [illegible],	कलकत्ता।
,, जयन्ती लालजी माणेकलालजी महता	कलकत्ता।
,, ,, महताबचन्दजी पूरणचन्दजी सामसुखा	कलकत्ता।
,, ,, हिम्मतमलजी विजयसिंहजी सुराणा,	कलकत्ता।
,, ,, भैंवरलालजी कमलसिंहजी रामपुरिया	कलकत्ता।
,, ,, विनोदचन्दजी पुरुषोत्तमदासजी झवेरी,	अहमदाबाद।
,, मगनचन्दजी परिचन्दजी बोथरा	कलकत्ता।
,, ,, नथमलजी सम्पतलालजी रामपुरिया,	कलकत्ता।
,, ,, धीरेन्द्रसिंहजी अशोककुमार सिंहजी सिंघी	कलकत्ता।
,, ,, प्रतापचन्दजी कल्याणचन्दजी बोरडिया,	कलकत्ता।
,, ,, लक्ष्मीचन्दजी फतेहचन्दजी कोचर,	कलकत्ता।
,, ,, रायसाहब मन्नालालजी दयाचन्दजी पारख,	कलकत्ता।
,, ,, सुगनमलजी पुनमचन्दजी गुजरानी,	सिरसा।
,, ,, रतनलालजी ताराचन्दजी बोथरा,	बीकानेर।
,, ,, रावतमलजी भैरूदानजी सुराणा,	बीकानेर।
,, ,, चान्दमलजी जवानमलजी मुणोत	सोलापुर।
,, जामतराजजी जवानमलजी पोरवाल	गुड़ाबालोतरा।
लालचन्दजी हस्तीमलजी चौधरी,	गढ़सिवाणा।
नेमीचन्दजी घेवरचन्दजी डाकलिया,	राजनांदगांव।

जीयागंज (मुर्शिदाबाद) निवासी

श्रीयुत बाबू श्रीपत सिंहजी दूगड का

संक्षिप्त परिचय

आपका जन्म सं० १९३८ में जीयागज में हुआ था। आपके पिताजी-का नाम छत्रपतसिंहजी और माताजीका नाम फूलकुमारी था। आपकी शिक्षा जीयागजमें हुई। आपका विवाह संस्कार १२ वर्षकी आयुमें बीकानेर हुआ था। आपकी १७ वर्षकी आयुमें आपके पिताजीका देहावसान हो गया। इसके बाद जमींदारीका कारोबार आप सचालन करने लगे।

सन १९४६ में आपने जीयागजमें कॉलेज स्थापित करवाया, जिसमें आपने, निजी निवासस्थानका विशाल भवन था, जिसकी लागत लगभग २५००००) रुपयेकी है, उसे कॉलेजके लिये दिया है। एवं २५००००) रुपये नकद तथा १५००००) की जमींदारी भी कॉलेजके सचालनके लिए दी है एव हॉस्टल-छात्रावास निर्माणके लिये भी १०२०००)रुपये 'गवर्नमेण्ट ऑफ वेस्ट बगाल' शिक्षा विभागके मन्त्री महोदयको प्रदान किये हैं। कॉलेजका नाम श्रीपतसिंह कॉलेज' रखा गया है। इसके सिवा प्रसूती गृहके लिये सन् १९५७ में जीयागजव London Misson Society's Hospital में जन महिलाओंके लिये रानी धन्ना कुमारी श्रीपत-सिंह वार्डके नामसे लगभग ६५,०००)रु० प्रदानकर एक पृथक् प्रसुतीगृह बनवा दिया है। आपने कलकत्तेके जैन भवनमें "लक्ष्मीपतसिंह श्रीपतसिंह दूगड हॉल बनवानेमें तथा अपनी धर्म पत्नी रानी धन्नाकुमारीके नामपर

उपरोक्त हालके ऊपर एक नया पुस्तकालय भवन निर्माणके लिये १५०,०००) दिये हैं। इसके अतिरिक्त अन्यान्य छोटे-मोटे जैन मन्दिर एवं जैन संस्थाओंमें लगभग ४५००००) रु० दान किये हैं।

जीयागञ्जमें आपकी संस्था-श्रीविमलनाथ भगवानका मन्दिर, पौषधशाला, आयंबिल, सदायनिधि खाता तथा धर्मशाला है। इनके निरन्तर निर्वाहके लिये आपने १०००००) रु० बैंकमें जमा करवा दिये हैं। इन संस्थाओंके संचालनका सारा कार्यभार 'कलकत्ता तुलापट्टी जैन श्वेताम्बर बड़े मन्दिर' के संचालकोंके जिम्मे रखा गया है। तथा विमलनाथस्वामीके जिनालयके लिए ४५०००) रु० तुलापट्टीके बड़े मन्दिरमें जमा कराये हैं।

अभी हाल ही में आपने १०००००) रु० श्री नरेन्द्रसिंहजी सिंघी तथा श्री परिचन्दजी बोथराकी निगरानीमें दिये हैं। जिसके ब्याजसे जीयागञ्जके मन्दिरोंका जीर्णोद्धारका काम चलता रहेगा।

इस प्रकार आपने धार्मिक कार्योंमें बड़े उत्साहसे दान दिया है और देते रहते हैं। इस समय आपकी उम्र ८४ वर्षकी है। अस्तु! शासनदेव आपको दीर्घजीवी करें। आपके चित्तमें सदैव धर्मकी सद्भावना उत्तरोत्तर बढ़ती रहे यही हमारी आन्तरिक अभिलाषा है।

१-४-१९६५
७, खेलात घोष लेन
कलकत्ता-६

निवेदक —
नरेन्द्रसिंह जैन

जीयागंज (मुर्शिदाबाद) निवासी

माननीय बाबू श्रीपतसिंहजी दूगड

आपने "आग्निनाथ हिन्दी जैन साहित्य माला" के सहायतार्थ ६०००। [illegible]

नवीन आजीवन सदस्य

हमें यह निवेदन करते हुए वडी ही प्रसन्नता है कि कलकत्ता निवासी परम माननीय धर्म-प्रेमी स्वर्गीय पन्नालालजी करणावटके सुपुत्र श्री विजयसिंहजी करणावट ने २०१) दो सौ एक रुपये प्रदान कर हमारी 'आदिनाथ-हिन्दी-जैन-साहित्य माला' के आजोवन सदस्य वननेकी सद्भावना प्रकट कर हमें अतीव प्रोत्साहित किया है। एतदर्थ सादर सस्नेह धन्यवाद !

आशा है, हमारे अन्यान्य धर्मवन्धु उक्त बाबू साहबके साहित्यानुरागका अनुकरण कर 'माला' के सदस्य बननेकी कृपाकर जैन हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यमें सहयोग देंगे।

१-४-५९
७ खेलात घोष लेन
कलकत्ता-६

भवदीय -
नरेन्द्रसिंह जैन

आजीवन सदस्य बनिये

यदि आप हमारी "आदिनाथ हिन्दी जैन साहित्य माला में ३५१) तीन सौ एकावन रुपये प्रदान कर आजीवन सदस्य बनेंगे तो माला की सभी पुस्तकें जिनका मूल्य लगभग १२०) एक सौ बीस रुपये हैं, वह सभी पुस्तकें आपको भेंट दी जायेंगी एवं भविष्य में प्रकाशित होनेवाली सभी पुस्तकें यानी प्रति वर्ष ढाई सौ या तीन सौ पृष्ठकी पुस्तकें प्रकाशित होंगी, वह आपको जीवन पर्यन्त भेंट मिलती रहेंगी।

इसके अतिरिक्त यदि आपके पास हमारी पहलेकी सभी पुस्तकें हों और उनको नहीं लेना चाहें तो २५१) दो सौ एकावन रुपये प्रदान कर आजीवन सदस्य बन सकेंगे। नियमानुसार प्रकाशित होने वाली पुस्तकें आपको निरन्तर भेंट मिलती रहेंगी एवं छोटी मोटी सभी पुस्तकों की सदस्य श्रेणी की सूचि में आपका शुभ नाम भी छपता रहेगा। यदि आप बाहर गाँव रहते हों तो पुस्तक भेजने का डाकखर्च आपके जिम्मे रहेगा, यानी डाकखर्च की वी०पी० आपके नाम की जायगी।

१।४।१९६५
७ खेलात घोष लेन
कलकत्ता ६

आपका :—
नरेन्द्र सिंह जैन

एक नजर इधर भी कीजिये

इधर-उधर की खराब किस्से कहानियों की पुस्तकें न पढकर शान्ति के समय हमारी प्रकाशित, उपदेश प्रद, धार्मिक, सरल सुन्दर सचित्र पुस्तकें मगवाकर अवश्य पढिये। इन पुस्तकों के पढने से एव मनन करने से आपकी आत्मा विकसित हो उठेगी। हमारी किसी भी एक पुस्तको पढना आरम्भ करने के बाद उसे छोडने की इच्छा न होगी। हम दावे के साथ लिखते हैं कि जैन -समाज के साहित्य मे हमारी पुस्तकों के अनुसार ऐसी अन्य पुस्तकें कदापि प्राप्त न होंगी। यदि आपको विश्वास न हो तो पहले एक पुस्तक को मगना कर पढिये। यदि पसन्द आय तो हमारी अन्यान्य सभी पुस्तकें मगना कर अवश्य ही पढ़िये। और अपने इष्ट मित्रों को भी पढने के लिए प्रेरित कीजिये। पढने-पढाने से ज्ञान दान का अपूर्व लाभ प्राप्त होता है।

मन्त्रीश्वर कल्पक

प्रथम परिच्छेद

[मगध–साम्राज्यपर नन्दवंश की सत्ताको स्थिर करने वाले जैन मन्त्रीश्वर के यशस्वी कार्य-कुशलताकी परिचायक ऐतिहासिक कथा।]

मगध देशकी राजधानी पाटली पुत्रके राज महलोंपर नन्दकी राजसत्ताकी विजय-ध्वजाएँ फहरा रही थीं। उसी समय की यह कथा है।

मगध देशका साम्राज्य चारों ओर विस्तृत एवं समृद्ध राजतंत्र था। परमार्हत् महाराजा उदायीकी मृत्युके पश्चात् मगधकी राजगादी-पर नन्द आसीन हुआ था। वह दैवी सहायता से ही पाटलीपुत्रमें मगधका राष्ट्र नायक एवं भाग्य विधाता बन सका था। पूर्वकृत पुण्यो-

दयकी यह भी एक अद्भुत एव अकल्पित गति है। जात-पॉत या कुल-शील अथवा सस्कारिताकी विरासत न होते हुए भी कल्का नापित (नाई) पिता एवं वेश्या माताका पुत्र नन्द, आज मगधका सर्व सत्ताधीश बनकर पाटली पुत्र के राज सिंहासनपर आसीन था।

परिवर्तनशील ससार में ये सब विचित्रताएँ सकलित होती रहती हैं। विचित्रता, विपमता और खाई-खन्दक या पर्वत-कन्दराओंकी यह चिरकालीन क्रीडा ससारमें निरतर चलती ही रहती है।

कोई उत्तराधिकारी न होनेसे उदायीकी मृत्युके पश्चात् दूसरे दिनके मध्याह्नमें जब नगर निवासियोंने सुना कि हमारे नगरकी किसी वेश्याका पुत्र राज्य सिंहासनपर आरूढ़ हुआ है, तब बड़े-से-बडे और समझदार माने जाने वाले बुद्धिमानोंकी मति भी कुण्ठित होगई। सभी लोग इस बातको स्वीकार करनेके लिये ही नाहीं कर देते, किन्तु नन्द भाग्य-

शाली था और उसका पुण्य थोडीही देरमें फलित होने वाला था। इस बातका पता उसे बडे सवेरे ही लग चुका था। जिस रात्रिमें महाराज उदायी की मृत्यु हुई, उसके अन्तिम प्रहरमें नन्दने एक चमत्कारिक स्वप्न देखा था। उसने स्वप्नमें सम्पूर्ण पाटलीपुत्रको अपनी आँतोंसे परिवेष्टित देखा था। वह जानता था कि स्वप्नका फलादेश भी अज्ञात होता है। अत इसके पहले भी कई बार उसे यह अनुभव होता था कि किसी भी समय मेरा भाग्योदय हो सकता है। वह तुरन्त जगकर फुर्तीसे उठ खडा हुआ और प्रात कालही नगरकी वाटिका-में जाकर पुष्प चुन लाया। इसके बाद वह सीधा ही नगरके राजपुरोहित उपाध्यायकी सेवामें जा पहुँचा।

अभी पो फटनेकी तैयारी ही थी कि उसी समय उपाध्यायके द्वारपर खड-खडाहट हुई। अत बडी अधीरतासे उपाध्यायने पूछा–"कौन है?" और ही द्वार खोल दिया।

उसीक्षण नन्द उनके चरणोंमें झुक गया। उसने पुष्पोंको गूँथकर बनी हुई माला उपाध्यायके आसनपर रख दी और बड़े सबेरे देखा हुआ स्वप्न विस्तारसे उनके सम्मुख निवेदन किया। अत फलादेश शास्त्रके समर्थ ज्ञाता एव पारंगत उपाध्यायने किसी निगूढ़ पारद्रष्टाकी तरह नदको नखशिखांत देखकर पहचान लिया। उन्होंने देखा कि किसी महान् सत्ताधीशके भाग्यमें सर्जित चिह्न उसके शरीर पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। यह सब क्षणभरमें ही हो गया।

उपाध्यायने मौन भग किया। उनकी समर्थ वाणीके द्वारा स्वप्नका फलादेश सुननेको नन्द अनिमिष नेत्रोंसे उनकी ओर देख रहा था। अत्यन्त सावधानीसे उसके कान उनकी ओर उत्सुकतासे लगे हुए थे।

उपाध्यायने कहा, "मेरा एक वचन स्वीकार करना पड़ेगा। नद!" और उसके मुखसे किसी प्रकारका उत्तर सुननेके पूर्व ही उपा-

ध्यायने फिर अपना अपूर्ण वाक्य पूरा करते हुए कहा,—"नंद ! आजसे मैं अपनी पुत्री तुझे सौंपता हूँ। मुझे विश्वास है कि पाटली-पुत्रका राज्याधिष्ठाता नंद मेरा जामाता बनेगा और इसमें मैं अपना गौरव समझता हूँ।"

नंदने तुरंत ही जान लिया कि मेरा स्वप्न मुझे महान् बन जानेकी सूचना दे रहा है और पचदिव्योंके प्रभावसे अपुत्रिक उदायीकी मृत्युके पश्चात् अगले प्रातःकाल ही नंद मगधके राज्य सिंहासनपर सर्वतंत्र स्वतंत्र सत्ताधारी बनकर बैठ गया। इस प्रकार उसी दिनसे नंदोंका राज्य मगध देशकी सत्ताका वाहक बन गया।

श्रमण भगवान महावीरदेवके निर्वाणके पश्चात् साठ वर्षकी अवधिमें मगधके स्वामीके रूपमें नंदराज्य-नंदवंश मगधके राज्यसिंहासन पर पाटलीपुत्र नगरीमें ही नहीं, समग्र भारत-वर्षमें भी प्रसिद्धिको प्राप्त हो गया।

परन्तु महाराज नंदको अभी कई सामन्त और कर-दाता राजा एवं पुराने सत्ताधारी

उसीक्षण नन्द उनके चरणोंमें झुक गया। उसने पुष्पोंको गूँथकर बनी हुई माला उपाध्यायके आसनपर रख दी और बडे सवेरे देखा हुआ स्वप्न विस्तारसे उनके सम्मुख निवेदन किया। अत फलादेश शास्त्रके समर्थ ज्ञाता एव पारंगत उपाध्यायने किसी निगूढ़ पारदृष्टाकी तरह नदको नखशिखात देखकर पहचान लिया। उन्होंने देखा कि किसी महान् सत्ताधीशके भाग्यमें सर्जित चिह्न उसके शरीर पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। यह सब क्षणभरमें ही हो गया।

उपाध्यायने मौन भग किया। उनकी समर्थ वाणीके द्वारा स्वप्नका फलादेश सुननेको नद अनिमिष नेत्रोंसे उनकी ओर देख रहा था। अत्यन्त सावधानीसे उसके कान उनकी ओर उत्सुकतासे लगे हुए थे।

उपाध्यायने कहा, "मेरा एक वचन स्वीकार करना पडेगा। नद !" और उसके मुखसे किसी प्रकारका उत्तर सुननेके पूर्व ही उपा-

ध्यायने फिर अपना अपूर्ण वाक्य पूरा करते हुए कहा,—"नंद ! आजसे मैं अपनी पुत्री तुझे सौंपता हूँ। मुझे विश्वास है कि पाटलीपुत्रका राज्याधिष्ठाता नंद मेरा जामाता बनेगा और इसमें मैं अपना गौरव समझता हूँ।"

नंदने तुरत ही जान लिया कि मेरा स्वप्न मुझे महान् बन जानेकी सूचना दे रहा है और पंचदिव्योंके प्रभावसे अपुत्रिक उदायीकी मृत्युके पश्चात् अगले प्रातःकाल ही नंद मगधके राज्य सिंहासनपर सर्वतंत्र स्वतंत्र सत्ताधारी बनकर बैठ गया। इस प्रकार उसी दिनसे नंदोंका राज्य मगध देशकी सत्ताका वाहक बन गया।

श्रमण भगवान महावीरदेवके निर्वाणके पश्चात् साठ वर्षकी अवधिमें मगधके स्वामीके रूपमें नंदराज्य-नंदवंश मगधके राज्यसिंहासन पर पाटलीपुत्र नगरीमें ही नहीं, समग्र भारतवर्षमें भी प्रसिद्धिको प्राप्त हो गया।

परन्तु महाराज नंदको अभी कई सामन्त और कर-दाता राजा एवं पुराने सत्ताधारी,

शासकोंने अपने 'सर्वसत्ताधीश'के रूपमें मानने से स्पष्ट शब्दोंमें इन्कार कर दिया था। उन लोगोंने चुनौती दे रक्खी थी कि 'गणिकाके पुत्र एव नाईकी वर्णसकर सतानको मगधके सिंहासनको स्पर्श करते हम कभी नहीं देख सकते।' इस प्रकारके उद्दामवृत्तिवाले लोगोंके बलवेको दबा देनेका भगीरथ कार्य महाराजा नदके सिरपर प्रारम्भकालमें ही अचानक आ पड़ा।

नदके भाग्यसे ही उसकी अचिन्त्य पुण्याई के कारण पहले ही सभी अनुकूलताएँ निर्माण कर दी थीं। 'रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि'का शास्त्र वचन ससारके पारदृष्टा अनुभवियोंके नवनीत रूपमें ही है। यह कभी निष्फल नहीं होता। अगाध सागरमें तूफानी वायुकी घुर-घुराहट करते भयकर कालमें या फुफकारते हुए जगली जानवरों से भीषण और घने जगलोंमें पूर्व पुण्य ही रक्षा करता है।

नन्द का आत्मीय जन कोई न था, किन्तु

पूर्व काल के किसी प्रवल पुण्य ने उसकी सहायता की। जिसके उदयका उपभोग करने का उसके लिए यह सुअवसर था। राजसिंहासन पर आरूढ़ नन्द राजाको अपना स्वामी मानने से इनकार करने वालों को नन्द ने अपना चमत्कार बतादिया। दैवी सहायतासे राजसभाके द्वारपालके स्थानपर खडी मूर्तियोंने ही महाराजके नन्दका आदेश पाकर उसका विरोध करने वालोंको कठोर दण्ड दिलाया। उसी समयसे नन्दकी धाक पाटलीपुत्रके चारों ओर सबके हृदयपर जमगई। मानवोंकी पुण्य कमाई देवलोकके देवोंको भी सहायताकेलिए आकर्षित करलेती है।

तभीसे नन्दके विरुद्ध एक भी शब्द उच्चारण करने या मगधके सत्ताधीशका अपमान करनेका सामर्थ्य किसीमें नहीं रहगया। बडे-बडे प्रतिस्पर्धी राजाओंको भी नन्दकी सत्ताके सम्मुख नतमस्तक होनेमें ही अपना हित साधन होता दिखाई देने लगा।

शासकोंने अपने 'सर्वसत्ताधीश'के रूपमें मानने से स्पष्ट शब्दोंमें इन्कार कर दिया था। उन लोगोंने चुनौती दे रक्खी थी कि 'गणिकाके पुत्र एव नाईकी वर्णसकर सतानको मगधके सिंहासनको स्पर्श करते हम कभी नहीं देख सकते।' इस प्रकारके उद्दामवृत्तिवाले लोगोंके बलवेको दबा देनेका भगीरथ कार्य महाराजा नदके सिरपर प्रारम्भकालमें ही अचानक आ पडा।

नदके भाग्यसे ही उसकी अचिन्त्य पुण्याई के कारण पहले ही सभी अनुकूलताएँ निर्माण कर दी थीं। 'रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि'का शास्त्र वचन ससारके पारद्रष्टा अनुभवियोंके नवनीत रूपमें ही है। यह कभी निष्फल नहीं होता। अगाध सागरमें तूफानी वायुकी घुर-घुराहट करते भयकर कालमें या फुफकारते हुए जगली जानवरो से भीषण और घने जगलोंमें पूर्व पुण्य ही रक्षा करता है।

नन्द का आत्मीय जन कोई न था, किन्तु

पूर्व काल के किसी प्रबल पुण्य ने उसकी सहायता की। जिसके उदयका उपभोग करने का उसके लिए यह सुअवसर था। राजसिंहासन पर आरूढ़ नन्द राजाको अपना स्वामी मानने से इनकार करने वाला को नन्द ने अपना चमत्कार बतादिया। दैवी सहायतासे राजसभाके द्वारपालके स्थानपर खडी मूर्तियोंने ही महाराजके नन्दका आदेश पाकर उसका विरोध करने वालोंको कठोर दण्ड दिलाया। उसी समयसे नन्दकी धाक पाटलीपुत्रके चारों ओर सबके हृदयपर जमगई। मानवोंकी पुण्य कमाई देवलोकके देवोंको भी सहायताकेलिए आकर्षित करलेती है।

तभीसे नन्दके विरुद्ध एक भी शब्द उच्चारण करने या मगधके सत्ताधीशका अपमान करनेका सामर्थ्य किसीमें नहीं रहगया। बड़े-बड़े प्रतिस्पर्धी राजाओंको भी नन्दकी सत्ताके सम्मुख नतमस्तक होनेमें ही अपना हित साधन होता दिखाई देने लगा।

प्रकृतिका पुरोहित भी ऐसे महान् पुरुषोंकी सेवा भक्ति करके अपना आतिथ्य धर्म भली-भाँति निवाहता था।

एकबार आचार्य महाराज श्री धर्मघोषसूरि अपने शिष्य समुदायके साथ पुरोहितके स्थानमें आकर रात्रिमें ठहरे। पुरोहितने उनकी यथाशक्ति सेवा सुश्रूषा की और अपनेको कृतकृत्य अनुभव किया। उस दिन उसने आचार्य महाराजसे श्रद्धापूर्वक धर्मका रहस्य भी समझा। तभीसे धर्मके सत्य तत्वोंका उसे परिचय हो गया। उसी समयसे उसे यह भी समझ पडा कि ब्राह्मणत्व और श्रमणत्व एक ही सुवर्ण मुद्राके दो पहलू हैं। उसने जान-लिया कि क्रोध, मान, माया अथवा लोभके बन्धन, राग या द्वेष, मद-मत्सर, अहभाव और ममताके तिमिर पटल जबतक आत्माके स्वरूप को आवृत्त किये हुए हैं, उसे रौंदे हुए हैं, तब-तक आत्मतेज-ब्रह्मत्व प्रकट नहीं हो सकता। इस प्रकार आचार्य महाराजके सदुपदेशसे

पुण्यकी यह एक कला किसी शिल्पकार-की तरह गूढ़ एव रहस्यमय भविष्य निर्माण कर रही थी। विद्वत्ता, सावधानी एव स्वाभिमानकी अपेक्षा पुण्यवानोंकी पुण्य-कमाई कोई अन्य ही प्रकारका प्रभाव दिखा रही थी।

ओ मानवो! यदि सुकृतकी प्रवृत्तिको भूल गये तो यह पुण्याई भी तुम्हारे भाग्यमें नहीं है, ऐसा निश्चित समझ लेना!

द्वितीय परिच्छेद

पुरोहित कपिल पाटलीपुत्र नगरके बाहर अपने परिवारके साथ रहता था। नगरके प्रवृत्तिमय वातावरणके प्रति उदासीन कपिल-को इस एकात स्थानमें रहना ही अच्छा लगता था। शांत, प्रकृतिरम्य एव ग्राम्य-समझे जाते हुए पुरोहितके आवासमें समय-समय पर श्रमण भगवान श्री महावीरदेवके भी आकर टिक जाते थे और भद्रिक

प्रकृतिका पुरोहित भी ऐसे महान् पुरुषोंकी सेवा भक्ति करके अपना आतिथ्य धर्म भली-भाँति निबाहता था।

एकबार आचार्य महाराज श्री धर्मघोषसूरि अपने शिष्य समुदायके साथ पुरोहितके स्थानमें आकर रात्रिमें ठहरे। पुरोहितने उनकी यथाशक्ति सेवा सुश्रूषा की और अपने को कृतकृत्य अनुभव किया। उस दिन उसने आचार्य महाराजसे श्रद्धापूर्वक धर्मका रहस्य भी समझा। तभीसे धर्मके सत्य तत्वोंका उसे परिचय हो गया। उसी समयसे उसे यह भी समझ पडा कि ब्राह्मणत्व और श्रमणत्व एक ही सुवर्ण मुद्राके दो पहलू हैं। उसने जान-लिया कि क्रोध, मान, माया अथवा लोभके बन्धन, राग या द्वेष, मद-मत्सर, अहभाव और ममताके तिमिर पटल जबतक आत्माके स्वरूप-को आवृत्त किये हुए हैं, उसे रौंदे हुए हैं, तब-तक आत्मतेज-ब्रह्मत्व प्रकट नहीं हो सकता। इस प्रकार आचार्य महाराजके सदुपदेशसे

पुरोहितको सम्यक् बोध प्राप्त हो गया। अत स्नान-शौचादिके दृढ़ आग्रही पुरोहितका मानस अब सभी प्रकारके पूर्वाग्रहसे मुक्त हो गया था। अब वह मानने लगा था कि 'अहिंसा, सयम और तपकी निर्मल त्रिवेणीका स्नान ही सच्चा शौच है। जबकि इनसे रहित शौचका बाह्य आडम्बर या दुराग्रह केवल आत्म वचना बन जाता है। यह सम्पूर्ण धर्म-विचारणा पुरोहितके मनमें तभीसे स्फुरित हो गई थी।

इस प्रकार वह सच्चा ब्राह्मण बन गया और उसी दिनसे कपिल श्रमण भगवान श्री महावीरदेवके धर्म-मार्गका सुश्रावक हो गया। उसी समयसे वह अपने जीवनकी धन्यताका यथार्थ अनुभव करने लगा। आचार्य महाराज वहाँसे अन्यत्र विहार कर गये।

कपिलके घर उसकी सात-सात पीढ़ियों-को उज्ज्वल करनेवाला एकमात्र पुत्र अपने जन्मके बाद कुछ ही दिनोंसे सतत रोग पीडित

रहता था। अत पुत्रका दु ख कपिलसे देखा नहीं जाता था। शारीरिक व्याधिके साधारणसे प्रभावसे भी रहित वह बालक प्रतिदिन अधिकाधिक क्षीण होता जा रहा था। उसकेलिए किये गये औषधोपचारकी भी कोई गणना नहीं थी। फिर भी बालकका शरीर कष्टसे निरन्तर छीजता जाता था। पुरोहित उसका निदान नहीं खोज सका। इसीलिए उसे अपने प्राणप्रिय पुत्रके कष्टकी यह यातना अधिकाधिक सतप्त करती थी। फिर भी श्रद्धालु और धर्मात्मा कपिलके हृदयमें विवेकका दीपक जाग्रत था ही। अतएव अपने पुत्रके अशुभोदयको समझकर वह इस स्थितिको समभावपूर्वक सहन कर लेता था। यही कारण था कि उसके धार्मिक जीवनका यह पवित्र प्रभाव उस छोटे बालकके मानस पर प्रबल परिणाम किये बिना नहीं रह सका और वह इतनी इतनी तीव्र वेदना एव असह्य पीडा होते हुए भी अवस्थामें छोटा किन्तु

संस्कारोंसे प्रौढ़ बालक मुखसे आह तक नहीं करता था, बल्कि धैर्यपूर्वक उस पीडाको सह लेता था।

कुछ दिनोंके बाद कपिलको पता लगा कि उसके पुत्रको किसी व्यंतरादि तुच्छ देवी-देवता अथवा भूत-प्रेतादिकी बाधा हो गई है, क्योंकि भूत-प्रेतादि अथवा व्यंतरादि क्षुद्र देवी-देवता अवसर पाते ही किसी न किसी निमित्तकी आडमें मानव प्राणीको संकटमय स्थितिमें फँसा देते हैं और उस प्राणीके अशुभोदयके कारण ऐसे देव बडे-बड़े व्यक्तियोंको भी त्रस्त कर देते हैं। इस सत्यसे कोई ना नहीं कर सकता।

पाप करते समयभी कर्ता (पापी) पुरुषकी आत्मा प्रसन्नता ही प्रकट करती है, किंतु उन्हें यह पता नहीं रहता कि भुगतनेके अवसर पर ये ही कर्म पाप अत्यन्त विचित्र-रूपमें उदित होकर भुगतने पडते हैं और उस समय ,ि ।र पर बुद्धिमान समझे जानेवालोंकी

मति भी चक्कर खा जाती है। वह समय ऐसा होता है जबकि सावधान होने अथवा पश्चात्ताप व्यक्त करनेका अवसर भी नहीं रह जाता।

इसके बाद फिर एकबार जैन श्रमण निर्ग्रन्थी कपिलके स्थानमें ठहरनेकी याचना कर स्थिरतापूर्वक टिक रहे। कपिलको जैन श्रमणोंके त्याग, तप और निर्मल शीलगुण आदि अत्यन्त मूल्यवान गुणोंके प्रति पूर्ण श्रद्धाभाव था। जैन साधुओंके सयम, जीवन-की पवित्रता, प्रभाविकता और तेजस्विता जगतमें अन्य कहीं खोजनेपर भी नहीं मिल सकती। इस बातका भी कपिलको जैन साधुओंके दीर्घकालके परिचयके पश्चात् दृढ़-रूपसे अनुभव हो चुका था।

इसी कारण उसे पूर्ण विश्वास था कि अपने पुत्रकी वह बाधा भी ऐसे ही पारसमणि साधुओंके स्पर्शसे दूर हो जायगी, क्योंकि समस्त ससारके पदार्थों या देवी शक्तियोंमें भी जो सामर्थ्य, प्रभाव और अपना परिचय

देनेकी शक्ति नहीं होती वह ऐसे वदनीय निर्दोप साधुओंके चरणोंकी रजमात्रमें हो सकती है। इस प्रकार उस श्रद्धालु ब्राह्मणकी सामान्य किंतु दृढ़ धारणा हो गई थी। इसके सिवाय उसे अन्य किसी चमत्कारमें विश्वास न था।

अतएव एकाध अवसरपर प्रसग पाकर उस वेदनासे पीडित पुत्रको उठाकर साधुओंके आसनके निकट लेटा दिया। उसके निकट ही साधुओंके आहार-पानीके पात्र भी रखे हुए थे। एक पात्रमें स्वच्छ जल भरा हुआ था। बालकका हाथ लगते ही पात्र टेढ़ा होकर उसमेंका जल बालकके शरीरपर गिर गया। इस प्रकार जैन श्रमणोंके पात्रमें निहित प्रासुक जलके स्पर्शसे कपिलके उस बालकके शरीरमें पैठी हुई व्यतरी बाधा तत्काल ही वहाँसे निकली और उसी दिनसे उस बालकका शरीर व्यतरीकी पीडासे मुक्त हो गया।

अन्तत पुरोहितके घरमें यह घटना आकस्मिक रूपसे ही घटित हो गई।

जैन श्रमणोंकी निर्मल त्यागवृत्ति और उज्ज्वल धर्मशीलताका प्रभाव इस प्रकार कपिल ब्राह्मणके भक्तिवासित भद्रिक हृदयमें कईगुना बढ़ गया। उसी दिनसे उसके परिवारमें यह घटना चिरस्मरणीय बन गई और अपने उदीयमान पुत्रके उज्ज्वल भविष्यके विपयमें कपिलको पूर्ण रूपसे आशा बध गई।

कल्प्य और पवित्र जलसे पीडामुक्त हुए कपिलका वह बालक तभीसे कल्प्यक अथवा कल्पकके नामसे प्रसिद्ध हो गया। बालक कल्पककी भाग्य रेखा उसी दिनसे पलटने लगी। धीरे-धीरे वह समझदार होता चला गया और योग्य अवस्था आनेपर विद्या-विज्ञान एव विद्वत्तामें उसने कुशलता प्राप्त की। यहाँतक कि यथा समय वह अपने पिताके स्थानपर अधिष्ठित हो गया। समग्र पाटलीपुत्र नगरमें कल्पककी प्रतिष्ठा पूर्ण रूपसे व्याप्त हो गई।

कल्पककी नम्रता, धर्मश्रद्धा और सतोष वृत्ति उसे एकात जीवनकी ओर प्रेरित कर रही थी। जबकि लोक प्रतिष्ठा और विद्वत्ता अथवा कुशलता उसे बलात् नदके राज्यमें उच्च अधिकारोंकी ओर आकृष्ट करती थी। इस तरह कई वर्षों तक कल्पकके जीवनमें इस प्रकारके दो विजातीय घर्षण चलते ही रहे।

—

तृतीय परिच्छेद

सुश्रावक कल्पकके द्वारपर कुलीन घरकी कला और लावण्य तथा रूपमें रतिके समान सुन्दर कन्याओंके पिता पाणि-ग्रहणके लिए प्रार्थी होकर उपस्थित होने लगे, किंतु अल्प परिग्रही और सदाचारी कल्पक

रूपी जालमें फँसनेको

चारी

तेजस्वी एव

सदैव चक्कर लगाता रहता था। उसकी पवित्रताके कारण लोग उसे देवताके समान पूजते थे। लोकमानसमें उसका स्थान अत्यंत गौरवास्पद हो गया था। नंदके राजकुलमें भी उसका प्रभाव, मर्यादा आदि धीरे-धीरे बढ़ते चले, किन्तु परम धर्मात्मा कल्पक सदैव ही इन सबसे दूर रहता था। उसे ये सब मान-पान या सम्मान की व्याधियाँ जबतब उकता देती थी, क्योंकि प्रारंभसे ही जैन साधुओंकी पवित्र साधुता के वातावरण में पलकर बड़े होने वाले कल्पकको यह सब उपाधिमय जान पड़ता था।

किन्तु उसके जीवनमें ऐसी एक आकस्मिक घटना किसी अज्ञात रूपसे भवितव्यता के बलपर घटित हो गई कि जिसके कारण संसारसे अलिप्त, एकान्त एवं भिन्न जीवनका आनन्दानुभव करने विषयक कल्पकके सभी मनोरथ उसी दिनसे एकदम भंग हो गये। जिस प्रकार संगमर्मरके किसी स्वच्छ शिला खण्डपर कलाको सजीव कर दिखाने सम्बन्धी

शिल्पीकी कितनी ही अभिलाषाएँ जीवनके किसी अचेत क्षणमें छेनी या टाँकीकी नोंकसे टूट जानेपर उस टुकडेके साथ शतधा छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, वैसी ही घटना कल्पकके लिए भी घटित हो गई।

और तभीसे कल्पक ससारी-गृहस्थ बन गया। वह एक ब्राह्मण कन्याका पाणिग्रहण करनेको विवश हो गया। एकान्त जीवनकी सभी कल्पनाएँ स्वप्नवत् होगई। जब कल्पकको उन बातोंका स्मरण होता, तब अपने जीवन प्रवाहकी इस परिवर्तित दिशाके लिए क्षणभर उसका हृदय सक्षोभके आघात-प्रत्याघात अनुभव करता था।

उसके सासारिक-जीवनमें प्रवेश करनेकी पूर्व घटना इस प्रकार थी। उसके पडोसमें एक ब्राह्मणका घर था। उस ब्राह्मणकी एकमात्र रूपवती कन्या जब यौवनकी देहरीपर अग्रसर होनेकी अवस्थामें पहुँच रही थी तभी अचानक जलोदरकी व्याधिसे पीडित होगई। यहाँ तक

कि पेट बेतरह बढ़ जानेसे वह दो-चार पग चलने या भूमिपर पाँव रखनेके लिए भी विवश होगयी थी। अत उसका पिता अपनी पुत्रीके इस दु खसे दु खित रहता था। उधर प्रतिदिन कन्याकी अवस्था भी बढ़ती जा रही थी और उस रोगग्रस्त कन्याका पाणि-ग्रहण करनेको कोई भी उद्यत् नहीं होता था। फलत पिताकी चिंता और भी बढ़ती गई।

अतत कल्पककी भद्रिकतासे लाभ उठाने की भावना कन्याके पिताके मनमें एकबार प्रबल हो उठी। चतुर मानव अच्छे-अच्छे समझदार एव सावधान पुरुषोंको भी कभी-कभी धोखा दे जाते हैं, क्योंकि कार्य कुशलता के प्रतिक्षण बदलते हुए मायावी रंग सहृदय मानवोंकी दृष्टिमें नहीं आ पाते।

एक दिन कल्पक जब उस मार्गसे जारहा था, तब उस ब्राह्मणने अपनी कन्याको, घरके पास ही एक गहरे गड्ढेमें धकेल दिया और एकदम उच्च स्वरमें, सकटग्रस्त हृदयसे घबराकर

शिल्पीकी कितनी ही अभिलाषाएँ जीवनके किसी अचेत क्षणमें छैनी या टाँकीकी नोंकसे टूट जानेपर उस टुकडेके साथ शतधा छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, वैसी ही घटना कल्पकके लिए भी घटित हो गई।

और तभीसे कल्पक ससारी-गृहस्थ बन गया। वह एक ब्राह्मण कन्याका पाणिग्रहण करनेको विवश हो गया। एकान्त जीवनकी सभी कल्पनाएँ स्वप्नवत् होगई। जब कल्पकको उन बातोंका स्मरण होता, तब अपने जीवन प्रवाहकी इस परिवर्तित दिशाके लिए क्षणभर उसका हृदय सक्षोभके आघात-प्रत्याघात अनुभव करता था।

उसके सासारिक-जीवनमें प्रवेश करनेकी पूर्व घटना इस प्रकार थी। उसके पडोसमे एक ब्राह्मणका घर था। उस ब्राह्मणकी एकमात्र रूपवती कन्या जब यौवनकी देहरीपर अग्रसर होनेकी अवस्थामें पहुँच रही थी तभी अचानक जलोदरकी व्याधिसे पीडित होगई। यहाँ तक

कि पेट बेतरह बढ़ जानेसे वह दो-चार पग चलने या भूमिपर पाँव रखनेके लिए भी विवश होगयी थी। अत उसका पिता अपनी पुत्रीके इस दु खसे दु खित रहता था। उधर प्रतिदिन कन्याकी अवस्था भी बढ़ती जा रही थी और उस रोगग्रस्त कन्याका पाणि-ग्रहण करनेको कोई भी उद्यत् नहीं होता था। फलत पिताकी चिंता और भी बढ़ती गई।

- अतत कल्पककी भद्रिकतासे लाभ उठाने की भावना कन्याके पिताके मनमें एकबार प्रबल हो उठी। चतुर मानव अच्छे-अच्छे समझदार एव सावधान पुरुषोंको भी कभी-कभी धोखा दे जाते हैं, क्योंकि कार्य कुशलता के प्रतिक्षण बदलते हुए मायावी रग सहृदय मानवोंकी दृष्टिमें नहीं आ पाते।

एक दिन कल्पक जब उस मार्गसे जारहा था, तब उस ब्राह्मणने अपनी कन्याको घरके पास ही एक गहरे गड्ढेमें धकेल दिया और एकदम उच्च स्वरमें सकटग्रस्त हृदयसे घबराकर

चिल्लाना आरभ किया —'अरे ! मेरी यह पुत्री गड्ढेमें गिर गई है, कोई आकर इसे बाहर निकाल दो ! जो इसे निकालेगा उसीको मैं इसे दान कर दूँगा।"

दयालु कल्पकके हृदयमें अनुकम्पाके भाव पूर्ण रूपसे भरे हुए थे। उसका करुणार्द्र अंतर इस घटनाकी गभीरताके कारण तत्काल ही सहानुभूति-वश द्रवित हो उठा। उस ब्राह्मण-कन्याके पिताके शब्दों या उसके आसपासके भेद भरे वातावरणसे परिचित होने अथवा उसकी गहराईमें उतरनेकी उसे उस समय आवश्यकता नहीं जान पड़ी। अतएव उसने तत्काल गड्ढेमें उतरकर रोग पीडिता कन्याको बाहर निकाल दिया।

तब कन्याके पिताने कल्पकसे कहा, 'अब आप इस कन्याको स्वीकार करें, क्योंकि मैं अपनी प्रतिज्ञा-भग नहीं कर सकता। ब्राह्मण लोग सदैव ही अपनी प्रतिज्ञाके पालनमें दृढ़-आग्रही होते हैं। कल्पक इस रहस्यको न

समझ सका और वह चुप रहगया।" इसके बाद उसने सहृदयताके साथ उत्तर दिया कि, 'केवल दयाभाव, और करुणा प्रेरित भावनासे ही मैंने यह कार्य किया है। इसके बदलेमें मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।" किन्तु वह ब्राह्मण यह सब सुननेको तैयार नहीं था। इस प्रकार अपनी भद्रिकताने कल्पकको इस समय किंकर्त्तव्यमूढ़ बना दिया। वह इनकार भी नहीं कर सकता था। उधर ब्राह्मण अपनी प्रतिज्ञा टूटने पर प्राणत्याग करनेका आग्रही बन गया था।

अतमें उस रूपवती ब्राह्मण कन्याके साथ कल्पकका विवाह हो गया, किन्तु कल्पकने आयुर्वेद-शास्त्रका भी अध्ययन किया था। अतएव अपनी रोग-पीडिता पत्नीको उसने उपचारके द्वारा धीरे-धीरे स्वस्थ कर लिया। इसप्रकार उस रूपवतीकी वह भयकर व्याधि कल्पकके उपचारसे सर्वथा नाम शेष होगई।

इसके बाद रूपवतीके साथ कल्पक का गृह-ससार अनेक वर्षों तक धार्मिकताके पवित्र

वातावरणमें व्यतीत होता रहा। अपनी विद्वत्ता, कुशलता और अपूर्व धर्म-श्रद्धाके कारण जन-मानसके सिंहासनपर कल्पक का स्थान विशेष रूपसे स्थिर हो चुका था, किन्तु उसे यह लोक प्रतिष्ठा, सम्मान या ख्याति शूलकी तरह चुभती थी। वह इसीलिए अधिकाधिक नम्र बनकर इनसे अस्पृश्य-दूर रहना चाहता था।

जिस प्रकार वृक्ष फल-फूल एव शाखा-प्रशाखाओं की सपत्तिसे समृद्ध हो जाता है, उसी प्रकार समृद्धिशाली मनुष्योंके आसपास के स्वार्थी जनोंकी टोलियाँ उन्हें भी उलझन में डाल देती हैं। नम्र, उदात्त और स्थिर प्रतिज्ञवत् वृक्षोंकी यही महत्ता है कि उन्हें सभी खोजते हुए चले आते हैं, और आग तुकके मानापमानको वृक्ष समान रूपसे सहन कर लेता है और समचित्त या उदार भावसे अपनी छाया मे समालेता है। फिर भी वह एकाकी, अचल और एकान्त जीवी होता है।

अतः कल्पककी बुद्धिमत्ता एवं उसके गुणोंकी ख्याति नन्दकी राजसभा तक भी जा पहुँची और महाराजा कल्पक की कुशलता एवं उसके सदाचार के प्रति अपने मनमें अत्यन्त आदर भाव रखने लगे। उनके मनमें अनेक बार यह प्रश्न उठता कि, 'यदि कल्पक के समान बुद्धिशाली ब्राह्मण मेरी राज्य व्यवस्थाकी पतवार हाथमें लेकर अमात्य पद स्वीकार करले तो कितना अच्छा हो ?' किन्तु कल्पककी निस्पृहता, एवं निडरता और स्वाभिमानी प्रकृतिके विषयमें उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था, अतएव वे अपना प्रस्ताव उसके सामने नहीं रख सके।

फिर भी एक दिन महाराजा नन्दने कल्पक को राजसभामें बुला लानेका आदेश दिया। अतः राजाज्ञाको मान देकर वह सभामें उपस्थित हुआ। तब मगध पतिने अत्यत नम्र वाणीमें कहा कि —"भद्र ! मगधके विशाल राजतन्त्रकी व्यवस्था तुम जैसे बुद्धिमान्

धर्मात्माकी अपेक्षा रखती है। अतएव मेरा आग्रह है कि कल्पकके समान धीर, गम्भीर और प्राज्ञ, पुण्यवान पुरुषके हाथों में ही मगधके राज-सिंहासनपर नन्दवंशकी विजय ध्वजा फहराती रहे।"

महाराजाके वचनोंमें नम्रताके साथ ही मिठास भी थी। अर्थात् सत्ताधारी होते हुए भी नन्दने बालकके समान कोमल भाषामें अपना भाव व्यक्त किया। फलतः कल्पकके अन्तरमें नन्दके शब्दोंने क्षणभरमें ही बिजली-के समान अपना प्रभाव दिखाया, किन्तु दूसरे ही क्षण उसे अपना निर्दोष एवं पवित्र एकान्त प्रिय जीवन झलकता दिखाई दिया।

उसके हृदयमें गूढ़-समस्याका सागर लहराने लगा। उसकी धार्मिकता, पापभीरु प्रकृति और बाल्यकालसे ही जैन श्रमण निर्ग्रन्थियोंकी उपासनासे उत्पन्न निष्पाप-जीवन व्यतीत करनेकी अभिलाषा आदि सभी संकल्प-मयी भावनाएँ एकके बाद दूसरी आकर

दर्शन देने लगीं। चित्रपटकी रूपहरी चादरपर जिस प्रकार दृश्य बदलते रहते हैं। उसी प्रकार अपने जीवनकी परिवर्तित गतिपर वह गभीरतासे सोचने लगा।

किन्तु वह अधिक देरतक मौन न रह सका। उधर नन्द जैसा महान् मगधका सम्राट् आतुर हृदयमे कल्पकके शब्दोंको सुननेके लिए उत्सुक था। वातावरणमें नीरव शाति थी। आसपासके सभी लोग कल्पकके गभीर-भावोंको उसकी मुखाकृतिपर झलकते देख सकनेका प्रयत्न करते रहे, किन्तु फिर भी कल्पकका अन्तर किसी अगाध सागरके गहरे जलमें छिपे हुए अनर्घ्य भडारके समान किसीकी भी समझमें न आ सका।

फिर थोडी ही देरमें उसने अपना मौन भग करते हुए निवेदन किया—"राजन्! मुझे अपने जीवन-निर्वाहसे अधिक कुछ भी प्राप्त करनेकी इच्छा नहीं है। मित-परिग्रह और अल्पारभ ये दोनोंही मेरे जीवनके प्राण-

प्रिय व्रत हैं। अतः इन्हें त्यागकर मैं आपकी आज्ञाका पालन करनेमें विवश हूँ।" उस समय उसके मुखमण्डलपर पर्वत जैसी दृढ़ता और आकाशगामी पुरुषार्थ, नेत्रोंमें अनन्त सागरकी गभीरता एवं वीतराग देवके धर्मकी आराधना-द्वारा आत्मामें अनुभव होनेवाली अखण्ड प्रसन्नता किसी अमूल्य सम्पत्तिके रूपमें उसके उत्तर-द्वारा सभामें उपस्थित सभी चतुर अधिकारियोंको प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थी।

इस प्रकार मगधके सर्व सत्ताधीशका आग्रह कल्पककी धर्मप्राण आत्माकी वाणी-द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। नन्दकी राजसभा काँप उठी। कल्पककी दृढ़, सत्त्वशीलता और अखण्ड धर्मवृत्ति इस प्रकार विजयी हो गई। महाराजा नन्द कल्पककी पवित्र धार्मिकताके सम्मुख निरुपाय हो गये।

किन्तु उसी दिनसे वे कल्पक द्वारा हुए अपमानका बदला चुकानेके अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे।

यथार्थमें अपमान या उपेक्षाके विषको पी जानेवाले मानव-महादेव हजारोंमें एकाध ही होते हैं। लाखों करोडोंमें भी विरले ही देखनेमें आते हैं। अन्यथा शेष तो जहाँ भी देखिये मानापमानके ही हिसाब जोडते दिखाई देते हैं और उसका सूद (ब्याज) चक्रवृद्धि-गणनाके रूपमें वसूल करनेका मायावी दाव ही लगाते देखे जाते हैं। अत जो इन सबसे बच सके वही कषायोंपर विजय प्राप्त कर समभाव संपादन करते हुए यथार्थ जीवन बिता सकते हैं, क्योंकि कल्याणका निष्कटक और पवित्रमार्ग इसके सिवाय दूसरा नहीं है।

कल्पक राजसभा छोडकर चल दिया। भरे हुए हृदयसे महाराज नंदने यह अपमानका घूँट पी लिया, किंतु उसी क्षणसे कल्पकके छिद्रों तथा दोषों-अपराधोंको देखनेकी वृत्ति नन्दके अपमानित हृदयमें जाग्रत हो उठी।

चतुर्थ परिच्छेद

कर्माधीन ससारमें परिवर्तन होते ही रहते हैं और वे इतनी तीव्रगति एव आकस्मिक रूपमें होते हैं कि अच्छे भले मतिमान् आत्मा भी कभी कभी उनके कार्य कारणकी गुत्थीको नहीं सुलझा सकते।

महाराजा नदके राज्य-अपराधीके रूपमें कल्पक जैसे विद्वान्को मगधके राज-दरबारमें खडे रहनेका यह प्रसग सचमुच एक कल्पना-से परेकी वस्तु हो सकता था।

कल्पकके हाथों एक निर्दोष आत्माके वधका अपराध हो गया था। वास्तवमें राजा नदने ही यह कौभाण्ड रचा था। जिसमें कि निर्दोष कल्पक अचानक फँस गया था। आज उसके इसी अपराधकी सुनवाई महाराजा नद-के सम्मुख हो रही थी।

राजसभाका वातावरण गभीर था। राज्य-

के अधिकारी माने जानेवाले सत्ताधारियोंके मुखपर इस अवसरपर किंचित् अप्रसन्नताकी रेखाएँ झलक रही थीं, और निरानन्द वदनसे कल्पक यह सब चुपचाप देख रहा था।

उस समय सूईके गिरनेतकका शब्द सुनाई देनेवाले नीरव वातावरणको भेदकर सत्तावाही शब्दोंमें महाराजा नदने कल्पकसे कहा — "कल्पक! अपराधीके रूपमें तुम्हें अपने बचाव के लिए कुछ कहना है?'

इस प्रकार उन शब्दोंमें कठोरता होते हुए भी नदके हृदयमें कल्पक जैसे विद्वान्के लिए अत्यन्त आदरभाव भी था, क्योंकि नद भलीभाँति जानता था कि कल्पकका अपराध मेरे ही प्रयत्नसे रचा गया है।

"रज्जु जो निर्दोष था, किंतु मेरी दृष्टिने दोषी मानकर उसे त्रस्त करनेका गभीर अपराध मेरे हाथोंसे कराया है। इसके सिवाय मुझे कुछ नहीं कहना है।' इन शब्दोंको सुनाते हुए कल्पकने ग्लानि अनुभव की।

मुखपर पश्चात्तापका दर्श दिखाई दे रहा था। एक सर्वथा निर्दोष मानवको कषायके वशीभूत होकर अज्ञान-पूर्वक जो पीडित किया, उसके लिए उसे स्वयं अपार दुःख हो रहा था और उस दुःखके आघात-प्रत्याघात उसके धीर हृदयमें वेदनाके तूफान खड़े कर रहे थे।

नंदके न्यायालयमें फिर एकबार शून्यताकी हवा फैल गई। नन्दने फिर कल्पकसे पूछा, "अच्छा, तो न्यायाधीशके रूपमें मैं तुम्हें जो दण्ड दूँगा उसे सहन करनेको तुम तैयार हो न ?"—उस समय पाशमें फँसे हुए शिकार जैसी असहाय दशामें कल्पकको देखकर नन्दकी प्रसन्नताका कोई पार नहीं था।

किन्तु फिर भी उत्तरमें कल्पकके शब्द स्पष्ट ही थे। उसने कह दिया—"अपराधीके रूपमें उतनी तैयारी रखकर ही मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूँ।' उसके इन शब्दोंमें हृदयकी अपार वेदना मूर्तिमान् हो रही थी।

मगधके साम्राज्यका स्वामी नंद कल्पकसे

यही उत्तर पानेकी आशा भी रखता था, किन्तु वह कल्पककी निस्पृहता तथा अडिग-वृत्तिको विचलित कर देनेकी वर्षो पुरानी भावनाएँ आज इस प्रकार सफल होती हुई अपनी आँखोंसे देख सका। उसने कल्पकको कह सुनाया कि, "कल्पक जसे पुरुष रत्नको उसके अपराधका यही दण्ड दिया जाता है कि उसे आजसे ही नन्दके विशाल साम्राज्यके मत्रित्व का पद-भार ग्रहण कर ससार भरमें नदवशकी यशस्वी ध्वजा अपनी सम्पूर्ण शक्ति एव राजनिष्ठा पूर्वक फहराती हुई रखनी होगी।"

कल्पकने अपने अपराधका यह दण्ड मूक बनकर सुना और उसी दिनसे महाराजा नद-के सर्वसत्ताधीश मत्रीके रूपमें कल्पककी नियुक्ति घोषित हुई। जैन मत्रीश्वर कल्पकके मस्तकपर नन्दवशकी साम्राज्य-धुराके मेरु भारका उत्तरदायित्व उसी समयसे आ गया।

कल्पककी कुशलतासे महाराजा नदका साम्राज्य उसी समयसे प्रतिदिन अधिकाधिक

समृद्ध होता चला। नदकी सत्ताके ईर्ष्यालु राजा कल्पककी इस पुण्याईके तेजोद्दीपी बनने लगे, किंतु अपनी धार्मिकताके पवित्र सस्कारों से रगा हुआ होनेसे मत्रीपदका यह अधिकार कल्पकको सतत जाग्रत रखता था। मगधके साम्राज्यपर इस रूपमें मत्रीके नाते कल्पक अपना पर्याप्त प्रभाव डाल सका था।

जैसे-जैसे जैन मत्रीश्वर कल्पक अधिक लोकप्रिय बनता चलागया। वसे-वैसे उसके राज्यके पुराने अधिकारियोंके हृदय कलुषितता के कीचडसे अधिकाधिक मलिन बनते चलेगये। कल्पकका अनिष्ट करनेकी वृत्तिवाले मानव पाटलीपुत्रके राज-काजमें बारबार दिखाई देने लगे।

ससारके मानवोंकी यही सबसे बडी निर्बलता है कि किसी भी समान धर्मीके निर्दोष उत्कर्षको सहन कर सकनेकी शक्ति उनमें नहीं होती। इन्हीं अशक्तियोंके योगसे जहाँ देखिये वहीं ईर्ष्या, असूया और चुगलखोर

वृत्तिकी जडें जमकर ससारके नन्दन वनको दावानल प्रकटाकर भस्म करदेती हैं। असन्तुष्ट हृदय स्वय जलते हैं और निर्बलोंको जलाते हैं। साथ ही वे देश या समाजकी शान्ति को सुलगानेवाली चिनगारियाँ बिखेरकर फूटकी ज्वाला भी धधकती रखते हैं।

इसीलिए कल्पककी शक्तियाँ मगधके राज्यशासनमें जैसे-जैसे फल फूलकर विकसित होती गई, वैसे-वैसे उस कल्पक की प्रभावशालितासे नन्दके अडोसी-पडोसी राजालोग भी मगधकी सत्ताके सम्मुख नम्र सेवक बनकर झुकते चले गये, किन्तु कल्पकके मन्त्रीपदकी ईर्ष्यासे उसके पुराने शत्रुओंके हृदयकी ज्वाला अधिकाधिक भडक उठी।

महाराजा नन्दके हृदय में कल्पक ही राज्य का सर्वस्व बन चुका था। उसके समान धीरगभीर एव स्थिर तथा कुशल मन्त्री को पाकर नन्दकी आत्मा सुखके स्वप्न देखती हुई शात भावसे विश्राम करती थी। वह सब

निश्चिन्त था, क्योंकि कल्पक जैसे जैन-मंत्री-श्वरके अद्भुत् व्यक्तित्वके प्रति उसके मनमें पूर्ण सद्भाव था। उसकी राज्य व्यवस्था के विषयमें नन्द को पूर्ण विश्वास था, किन्तु यह सब होते हुए भी पुराने शत्रु उसके छिद्रोंकी ही खोजमें लगे रहते थे। इसीलिए एकबार तो वे नन्दके हृदयमें कल्पकके प्रति अविश्वास उत्पन्न करनेमें भी सफल हो गये।

वह एक साधारण-सी घटना थी, और कल्पक को उस घटनाके पीछे चल रहे उस विकृत वातावरणकी गंधतक नहीं थी। उस घटनाको पुराने राज्यमंत्रियोंने किसी नये ही रूपमें महाराजा नन्दके राज्यशासनमें सहज ही समाविष्ट कर दिया।

वह घटना सक्षेप में इस प्रकार थी:—

'कल्पकके यहाँ उसके ज्येष्ठ पुत्रके विवाह का प्रसग था। इसके लिए उसने अपने यहाँ अपनी प्रतिष्ठाके अनुरूप सब प्रकारसे तयारी की थी। महाराजा नन्दको अपने

यहाँ आमन्त्रित कर अच्छे और बढ़िया शस्त्र उन्हें भेंट करनेकी उसे इच्छा थी। इसीलिए उसने अनेक प्रकारके नये-नये शस्त्र निर्माण कराने आरंभ किये।

किन्तु इस प्रकार उसके यहाँ नये शस्त्र विपुल परिमाण में निर्माण किये जानेका समाचार जब उसके छिद्रान्वेषी अधिकारियोंके कानों पर पहुँचे, तो उसीक्षण उन असन्तुष्ट मानवोंने अपनी मलिन वृत्तिके पापमय प्रपञ्च खड़ेकर महाराजा नन्दको चक्करमें डालनेका प्रयत्न आरम्भ करदिया।

कल्पकके आजानेसे जिनका मन्त्री पद छिना गया था, वे ही पुराने मन्त्री इस अवसर पर महाराजा नन्दके कानोंमें गुनगुनाने लगे। जब महाराजाने सावधान होकर एकसे पूछा तो उस अपमानित मानवने उत्तर दिया कि –"हे राजन्! आप हमारे सिरताज हैं। हमपर कृपादृष्टि रखना जिस प्रकार एक उचित आचार है उसी प्रकार सेवकके रूपमें अ।

हित की चिन्ता रखना हमारा भी कर्तव्य है।
इसीलिए मैं आपको सावधान करना चाहता
हूँ कि चतुर कल्पककी चालाकीसे सचेत रहें।"

नन्दके हृदयमें यह धीमा विष उँडेलनेकी
दुष्ट भावनासे ही वह यह सब कह रहा था
और किंचित् संदिग्ध हृदयवाले नन्द को
अधिक मात्रामें बहकानेके लिए उसने विशेष
रूपसे विष उँडेलते हुए फिर कहा, "प्रभो!
आपके सम्मुख मिथ्या भाषण करनेकी हमें
कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपके
पुराने सेवकके नाते आपके हितकी रक्षा ही
हमारे प्रत्येक श्वासोछ्वासके साथ जुडी हुई
है। इसीलिए कल्पकके कृष्णकर्मों की जानकारी
देना हमारा पहला कर्तव्य है। इसी कर्तव्यको
पालन करनेकी हमें बडी प्रसन्नता है।

इस प्रकार नन्दके हृदयमें उस षड्यन्त्री
अमात्यने सहज ही कालकूट उँडेल दिया।
मगधके सत्ताधीश कच्चे कानोके थे। वह इन
सब बातोंमें रस लेने लगे। उनकी मानसिक

स्थिति डाँवाडोल होने लगी। तबतक उन पुराने षड्यन्त्रियोंने फिर एकबार अवसर पाकर नन्दके विचलित हृदयके शल्यको अधिक गहराईमें दृढ़ करनेके लिए कहा,—

"महाराज! यदि आप प्रपंची कल्पकके कपट-जालके विषयमें भेद जानना चाहें तो स्वयं जाँच कराइये कि उसके घरमें क्या षड्यन्त्र रचा जा रहा है? आपके राज्यतन्त्रमें विद्रोह खड़ा करनेके लिए उसने गुप्तरूपसे शस्त्र-सामग्री तैयार कराना आरम्भ किया है। अतएव आपके राज्यके पुरातन शुभचिंतकके नाते अपना कर्तव्य समझकर यह समाचार सुनाना हमने उचित समझा है। अब, आप जो कुछ भी उचित समझें वह करनेके अधिकारी हैं।"

नन्दने ये सब बातें ध्यान पूर्वक सुनीं। उसके कलेजे पर मानो वज्रपातकी तरह किसी अकथनीय वेदनाके गंभीर बवंडर (चक्र) से व्याप्त होते दिखाई दिये ...

उसके हृदयने किसी गम्भीर आघातकी सी व्यथा अनुभव की। उलझनोंके वात्याचक्रने उसे क्षणभरके लिए विचारमग्न कर दिया। क्षणभरके लिए वह भ्रमजालमें फँस गया। थोडी ही देरमें उसने अपने विश्वस्त राज-कर्मचारियों को स्पष्ट शब्दोंमें आदेश दिया कि, "मगधके सर्वसत्ताधीशके विरुद्ध विद्रोह और वह भी विश्वसनीय राजनीति-कुशल, मत्री कल्पकके द्वारा खडा किया जा रहा है? अत जाओ! मेरे राजभक्त सेवकों! मत्रीश्वर के घरपर यदि शस्त्र-सामग्री तैयार होती दिखाई दे, तो तुरत आकर मुझे खबर दो।"

महाराजके शब्द आकाशमें गूँजते हुए चारोंओर फैलगये। मगधकी सत्ताके आधार भूत-पाये डोल उठने जैसी अधीरता नन्दके इन शब्दोंसे प्रकट हो रही थी। राजाज्ञाको सिर चढ़ाकर पाटलीपुत्रके मलीन राज्यकर्मचारी कल्पकके आवास की ओर चल दिये।

कल्पक मंत्री अवश्य था; किन्तु सत्ताका

मद उसे अवतक किसी प्रकार विचलित नहीं कर सका था। धीरताके साथ सत्ता को आत्मसात् कर लेनेका अपूर्व आत्म-सामर्थ्य उसमें विद्यमान था। उसके यहाँ मगधके समय राज्य-शासन का कार्य-संचालन होता था। राज्य-सत्ताका अंतिम सूत्र कल्पकके ही हाथोंमें था। अतः वह पूर्णतया सावधान भी था। शुभ या अशुभ, पाप या पुण्य, के उदयकी कर्मद्वारा निर्मित गुत्थियोंसे वह सर्वथा परिचित था। सब प्रकारकी परिस्थितियोंमें समभावकी मनोवृत्ति बनाये रखना उसे सिद्ध हो चुका था और यह धर्म-विचारणा उसे सदैव सावधान रखती थी कि 'कलतक साधारण मानव समझा जानेवाला कल्पक, आज महान् साम्राज्यका तंत्र वाहक है, किन्तु कल कौन हो सकता है? इसका पता किसे है?" इस तरह वह सदैव जागरूक बनकर ही शासन-सत्ता का कार्य भार करता था।

जब नन्दके निजी अधिकारियोंने ...

मत्री कल्पकके घरमें प्रवेश किया, तो उस समय कल्पक अपने कमरेमें कामकाजमें व्यस्त था, किन्तु आनेवाले अधिकारी आज स्वतत्र थे। स्वय मगधके सर्वसत्ता-धीशकी सत्ताका स्वतत्र रूपसे उपयोग करनेका अवसर आज उन्हें प्राप्त हुआ था। अतएव बहुत ही बेपर्वा-हीसे वे मत्रीश्वरके भवनके प्रत्येक कोने तक घूम गये।

उन्होंने अत्यन्त आश्चर्यके बीच देखा कि ढेरों शस्त्रास्त्रोंको वहाँ गुप्त रूपसे तैयार किया जा रहा है। अत. वे बहुत ही बारीकी और दृढ़तासे वह सब दृश्य देखते रहे। वातावरण में अविश्वासकी गभीर लहर चारों ओर फैल गई, किंतु अवतक अपने ही माने जाने वाले इन सब मनुष्योंके इस प्रकारके स्वतत्र आचरणसे मत्रीश्वर थोडी देरके लिए अवश्य विचार मग्न हो गये। अपनी बुद्धि, तर्क शक्ति और शोधक दृढ़ भावनाके द्वारा उन्होंने इसका मर्म जाननेके लिए सपूर्ण परिस्थिति

पर दृष्टिपात किया, किन्तु उस वातावरणके मूल कारण तक वे नहीं पहुँच सके।

नन्दके वे राजभक्त सेवक थोडी ही देरमें वहाँसे चले गये। वे 'कुछ' लेकर आये थे और 'कुछ' लेकर गये। वे जब चले गये और उनके पाँवोंकी आहट सुनाई देना जब बन्द होगया, तबतक भी स्वच्छ वृत्तिके महामन्त्री, मायावी मनुष्यों की इस चालको न समझ सके, क्योंकि निर्मल हृदय वाले मानव सदैव ही निश्चिन्त होते हैं। जबकि पापात्मा चारों ओरसे निरंतर शंकित रहते हैं।

पञ्चम परिच्छेद

अतत एकवार फिर वही अवसर उपस्थित हुआ।

नन्दके महामन्त्री-पदका सम्मान प्राप्त करनेवाले कल्पकपर राज्यद्रोहका बड़ा भयंकर

अपराध सिद्ध हो गया। न्यायकी अदालतने भी केवल न्याय का नाटक कर दिखाया और कल्पकको उसके अपराधके लिए यह दण्डाज्ञा सुनाई गई 'कि नन्दके शत्रुओंके साथ मिलकर मगधकी सत्ताका सर्वनाश करनेके लिए गुप्त षड्यन्त्र रचनेके अपराधी कल्पकको उसके परिवार सहित जीवन भरके लिए अंधेरे कारागारमें डाल दिया जाय !'

सत्ताका परिपालन तुरत ही आरम्भ हो गया। निर्दोष कल्पक, उसके परिवारके साथ पाटलीपुत्रकी किसी अंधेरी और गहरी कोठरीमें अपना जीवन पूरा करनेको विवश होगया। पाप पुण्यकी हरी-सूखी लहरोंने मन्त्रीश्वर कल्पकके जीवनमें इस प्रकार माया के रंगमंच पर नाटककी तरह अनेक दृश्यावली निर्माण करदीं। जैन दर्शनके कर्मवाद तत्व का अमृतपान करनेवाले कल्पकने इस दारुण विपत्तिको भी समभावसे सहन कर लेनेका निश्चय किया।

कर्म द्वारा निर्मित सयोग-वियोगके इष्टा-निष्ट प्रसगोकी इन सब विचित्र लीलाओं से वह परिचित हो चुका था। इसीलिए यह आकस्मिक आपत्ति उसकी आत्मापर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाल सकी, किंतु मान भग करनेवाले इस प्रसगने उसके शान्त एव प्रबुद्ध मस्तिष्कको अनेक बार विकलताकी व्यथा अनुभव करनेको विवश करनेमें कोई त्रुटि नहीं होने दी।

'निर्दोष व्यवहार, साधुवृत्ति एव निस्पृह जीवनका पालन कल्पकने सत्तारूढ़ रहते हुए भी किया। तलवारकी नोंकपर उसने जीवन को स्पर्धामें चढ़ा दिया था, किन्तु फिर भी परिणाममें इसप्रकारका भयकर कलक ही हाथ लगा!' इन सब विकल्पोंसे घिरजाने पर उसने कई दिनोंतक अन्न-पान भी त्याग दिया।

कल्पकका समस्त परिवार उसके तथाक-थित अपराधका दड भागी बनकर नरककी रौरव वेदनाए उसके सामने ही भोग रहा था।

अतएव यह व्यथा भी कल्पकके समान स्वस्थ धीर-गभीर सत्वशालीको अत्यत व्यग्र करदेती थी। अपना फला-फूला ससार इस प्रकार अचानक किन्हीं दोचार कुटिल पड्यन्त्रियोंकी आसुरी लालसाका शिकार बनकर अन्यायकी चक्कीमें पिस रहा है, इस विचारके आते ही वह महामात्य सिरसे पाँवतक काँप उठता था।

अतमें उस अधेरी कोठरीकी रौद्र यातना भोगते हुए मत्रीश्वरने एकदिन अपने परिवार से कह दियाकि, "देखो! हमें इस रौरव नरक में डालने वाले पड्यन्त्रकारियोंको दण्ड देने का मैंने निश्चय किया है। राजा नन्द हमें घुट-घुट कर विना मौतके इस प्रकार मार डालेगा। अतएव इस प्रकार पशुओंसे भी अधिक करुण जीवन समाप्त कर मर जानेकी अपेक्षा एक ऐसा धीर बुद्धिशाली हममेंसे बचजाय, इस प्रकार का उपाय करना हमारे लिए परमावश्यक है। जिससेकि उन पड्यंत्रि-योंको उनके पापोंका दड देनेके लिए वह सब

प्रकारसे समर्थ हो सके।' इस प्रकार कहते-कहते कल्पकके मुखपर विषाद और रोषकी चित्र विचित्र रेखाएँ झलक उठीं।

परिवारके आत्मीयजनोंने यह सब सुना और अपने जीवनके फले-फूले नन्दनवन के इस प्रकार असमय ही मुर्झाकर नष्ट हो जाने की कल्पनासे उन सबके मन विचलित हो उठे, किंतु इस शत्रुताका बदला चुकानेकी कल्पनाने दूसरे ही क्षण उन लोगोंको शांत बना दिया।

वेदना मिश्रित वाणीको शब्ददेह प्रदान करते हुए उन्होंने मन्त्रीश्वरसे कहा.- "पूज्य! हमलोग जियें तो क्या और मर भी जायँ तो क्या? क्योंकि मृत्युकी अपेक्षा हमारे जीवनका अब कोई विशेष मूल्य नहीं रह गया है। एक घडा भर जल और पाँच सेर चावल की खडी भोजनके लिए भेजकर नन्द राजा हमें रुला-रुलाकर मार डालना चाहता है। कच्चे कानवाला नन्द क्षुद्र मानवोंकी इस मायावी ताण्डव लीलाका इस प्रकार

अतएव यह व्यथा भी कल्पकके समान स्वस्थ धीर-गभीर सत्वशालीको अत्यत व्यग्र करदेती थी। अपना फला-फूला ससार इस प्रकार अचानक किन्हीं दोचार कुटिल षड्यन्त्रियोंकी आसुरी लालसाका शिकार वनकर अन्यायकी चक्कीमें पिस रहा है, इस विचारके आते ही वह महामात्य सिरसे पाँवतक काँप उठता था।

अतमें उस अधेरी कोठरीकी रौद्र यातना भोगते हुए मत्रीश्वरने एकदिन अपने परिवार से कह दियाकि, "देखो! हमें इस रौरव नरक में डालने वाले षड्यन्त्रकारियोंको दण्ड देने का मैंने निश्चय किया है। राजा नन्द हमें घुट-घुट कर विना मौतके इस प्रकार मार डालेगा। अतएव इस प्रकार पशुओंसे भी अधिक करुण जीवन समाप्त कर मर जानेकी अपेक्षा एक ऐसा धीर बुद्धिशाली हममेंसे वचजाय, इस प्रकार का उपाय करना हमारे लिए परमावश्यक है। जिससेकि उन षड्यन्त्रि-योंको उनके पापोंका दड देनेके लिए वह सब

प्रकारसे समर्थ हो सके।' इस प्रकार कहते-कहते कल्पकके मुखपर विषाद और रोषकी चित्र विचित्र रेखाएँ झलक उठीं।

परिवारके आत्मीयजनोंने यह सब सुना और अपने जीवनके फले-फूले नन्दनवन के इस प्रकार असमय ही मुर्झाकर नष्ट हो जाने की कल्पनासे उन सबके मन विचलित हो उठे, किंतु इस शत्रुताका बदला चुकानेकी कल्पनाने दूसरे ही क्षण उन लोगोंको शात बना दिया।

वेदना मिश्रित वाणीको शब्ददेह प्रदान करते हुए उन्होंने मत्रीश्वरसे कहा- "पूज्य! हमलोग जियें तो क्या और मर भी जायँ तो क्या? क्योंकि मृत्युकी अपेक्षा हमारे जीवनका अब कोई विशेष मूल्य नहीं रह गया है। एक घडा भर जल और पाँच सेर चावल की खडी भोजनके लिए भेजकर नन्द राजा रुला-रुलाकर मार डालना चाहता है।
नन्द क्षुद्र मानवोंकी इस
इस प्रकार केवल

अतएव यह व्यथा भी कल्पकके समान स्वस्थ धीर-गभीर सत्वशालीको अत्यत व्यग्र करदेती थी। अपना फला-फूला ससार इस प्रकार अचानक किन्हीं दोचार कुटिल षड्यन्त्रियोंकी आसुरी लालसाका शिकार बनकर अन्यायकी चक्कीमें पिस रहा है, इस विचारके आते ही वह महामात्य सिरसे पाँवतक काँप उठता था।

अतमें उस अधेरी कोठरीकी रौद्र यातना भोगते हुए मन्त्रीश्वरने एकदिन अपने परिवा से कह दियाकि, "देखो! हमें इस रौरव नर में डालने वाले षड्यत्रकारियोंको दण्ड दे का मैंने निश्चय किया है। राजा नन्द घुट-घुट कर विना मौतके इस प्रकार डालेगा। अतएव इस प्रकार अधिक करुण जीवन समाप्त कर मर अपेक्षा एक ऐसा धीर बुद्धिशाली बचजाय, इस प्रकार उपाय लिए योंको

प्रकारसे समर्थ हो सके।' इस प्रकार कहते-कहते कल्पकके मुखपर विषाद और रोषकी चित्र-विचित्र रेखाएँ भलक उठीं।

परिवारके आत्मीयजनोंने यह सब सुना और अपने जीवनके फले-फूले नन्दनवन के इस प्रकार असमय ही मुर्भाकर नष्ट हो जाने की कल्पनासे उन सबके मन विचलित हो उठे, किंतु इस शत्रुताका बदला चुकानेकी कल्पनाने दूसरे ही क्षण उन लोगोंको शांत बना दिया।

वेदना मिश्रित वाणीको शब्ददेह प्रदान करते हुए उन्होंने मन्त्रीश्वरसे कहा - "पूज्य! हमलोग जियें तो क्या और मर भी जायँ तो क्या? क्योंकि मृत्युकी अपेक्षा हमारे जीवनका अब कोई विशेष मूल्य नहीं रह गया है। एक घडा भर जल और पाँच सेर चावल की खडी भोजनके लिए भेजकर नन्द राजा ...रुलाकर मार डालना चाहता है। नन्द क्षुद्र मानवोंकी इस ...ाका इस प्रकार केवल

साक्षी बन रहा है। यदि आप जीवित रहेंगे तो उन मायावी षड्यन्त्रियों को उचित दण्ड दे सकेंगे और तभी अबतक आपके द्वारा सोलहों कलाओंसे विकसित इस मगध राज्य की समृद्धि स्थिर रह सकेगी।"

"मगधके सिंहासनपर नन्दकी फैलती हुई यश वेलिको पूर्णतया फली फूली बना सकने-का सामर्थ्य आपके सिवाय अन्य किसीमें भी नहीं है। अत ऐसा होनेपर नन्दवशकी समृद्धिके फलोंका उपभोग करनेके लिए हमारे उत्तराधिकारी शक्तिशाली बन सकें तो हम अपने बलिदानका मूल्य भर पाया समझकर सतोष पूर्वक मृत्युको वरण कर सकेंगे।"

यह प्रसग अत्यत ही करुण था कि अधेरी कोठरीके आपद्ग्रस्त मानवोंके इन शब्दोंने उस समय सम्पूर्ण वातावरणको गम्भीर बना दिया। कलतक विशाल गगनचुम्बी महलोंकी देवदुर्लभ अति समृद्धिका उपभोग करनेवाले

मन्त्रीश्वरका यह परिवार अपने जीवनकी आशा त्यागकर अब निश्चिन्त होगया था। धर्मात्मा कल्पकने अपने इस परिवार को संसारके पदार्थों की क्षणिकताका बोध कराकर समाधिमें स्थिर रक्खा। धर्मके तत्त्वज्ञान का बोध पाकर वे लोग भी अंतमें समाधि पूर्वक मृत्युकी गोदमें पहुँच गये। महोत्सवकी तरह उन्होंने मृत्युको वरण किया।

इधर कल्पकके सत्ता भ्रष्ट होनेके बाद मगधके साम्राज्यको धधकती ज्वालामें जलता हुआ देखनेके लिए आतुर बने हुए छोटे-छोटे राज्य मगध की सत्ताको चुनौती देनेके लिए तैयार हो गये। मन्त्रीश्वर कल्पककी बुद्धिमत्ता पूर्ण शासन कुशलताने अबतक उन सब विद्रोहियोंको दबाकर रक्खा था। अत कल्पकके पुण्य तेजसे कॉंपते हुए उन राज्योंने हमेशा मगधकी सत्ताके चरणों की वदना करनेमें ही अपना अस्तित्व सुरक्षित समझा था। उधर कल्पकके कॉंटेको उखाड फेंकनेकी वैर-वृत्ति

उन सत्ताधिकारियोंको वारवार वेचैन करती, किंतु फिर भी वे विवश होकर चुप रह जाते। कल्पककी पुण्य शक्ति के सम्मुख उनलोगों का कोई उपाय काम नहीं देता था।

किंतु अव कल्पकसे रहित मगध की सत्ता को निर्जीव माननेवाले उन 'करद' राज्योंने खुले रूप में विद्रोह खडा कर दिया। पाटली-पुत्रकी राज्य-व्यवस्था में कल्पककी अनुप-स्थितिके वीच एक दम अराजकता फैल गई थी। मगधका वल, उसका भण्डार, सेना आदि जो कुछ भी था—वह सव कल्पक मन्त्री-श्वरके प्रभाव, कार्यकुशलता और प्रवन्ध शक्ति पर निर्भर था।

आज मगधकी राजधानीके राजतन्त्रमें सौमन तैल होते हुए भी अँधकार छाया हुआ था। विद्रोही सत्ताओंके लिए यह एक सुवर्ण अवसर था। मगध-राज्यपरसे नंदवशकी सत्ताको उखाड फेंकने और अपनी सामुदायिक सत्ता स्थापित करनेके मनोरथ आज उन्हें सफल होते दीख पडे।

मानव स्वभावकी इस निर्वलताने शत्रुता का बदला चुकानेका मार्ग सदैवके लिए खुला रख छोडा है। अपकारको भूलकर उपकारको याद रखनेकी सज्जनता वैर-वृत्तिसे जलते हुए मानवोंके हृदयसे सदैवके लिए विसर्जित हो जाती है। जीवनको ठीक ढगसे जीनेकी विधि सिखा कर उसमेंके व्यक्त विषको नष्ट करने वाला अमृत, यही सज्जनता है। दुर्जनताके गाढ अधकारमें सज्जनताके प्रकाश का मूल्य नहीं आँका जा सकता।

"किंतु ये छोटे-छोटे राज्य, जोकि निर्वल राज्य पुण्य भोगनेवाले सत्ताके भूखे राजाओंके अधीन थे, वे सब भला, धर्मके तत्वज्ञानकी विरासत कहाँसे पा सकते थे? नन्दकी निर्वलतासे लाभ उठानेकेलिए उन नर पिशाचों की वृत्तियाँ इस समय पूर्णरूपसे उत्तेजित हो रही थीं। वैरवृत्तिकी अग्निसे उनकी आत्माएँ सतप्त हो रही थीं। अत उन्होंने अतिम लडाई लडनेका निश्चय किया और अपनी-

अपनी सेनाओंके साथ उन्होंने देखते ही देखते नगरको घेर लिया।

किंतु इसके पूर्व उन लोगोंने राजनीतिका नाटक अभिनीत कर दिखानेके लिए दूतके द्वारा मगधके सर्व सत्ताधीश महाराजा नन्दको चुनौतीका सन्देश भिजवाया। दूतने महाराजा नंदकी राजसभामें जाकर चुनौती दी।

"सिंध, सौवीर, चोल, वत्स और सौराष्ट्र राज्यका प्रतिनिधि मण्डल आपको सूचित करता है कि- अब आपकी सत्ताका सूर्य अस्त हो चुका है। अत जिसका भुजवल हो उसीका राज्यवल भी होता है' यह प्रखरसत्य राजनीतिज्ञ के चाणक्यने ससारको वतला रक्खा है। ऐसी दशामें मगधकी राजधानी परका अधिकार अब केवल वश-परम्परासे चले आनेवाले अमर पट्टे के रूपमें नहीं होसकता। इसी कारण अब हम ऐसे मनमाने स्वतंत्र शासनको माननेके लिए किसी प्रकार भी तैयार नहीं हैं। हाँ, मगधकी सत्ताके साथ समान दर्जेपर रहना

हमें अवश्य स्वीकार है। इसके सिवाय किसी भी सन्धि या समझौतेको हम स्वीकार नहीं करते। इसके सम्बन्धमें हम मगध नरेशके योग्य उत्तरकी प्रतीक्षामें रुके हुए हैं। अन्यथा-युद्ध, युद्ध और युद्ध ही हमारे लिए अन्तिम मार्ग है।"

इस प्रकार दूतके वचनोंसे युद्धकी अग्नि सुलगती हुई दिखाई देरही थी। नदके मत्री-मण्डलने यह सब सुना। कल्पकके सत्ता भ्रष्ट होने के बाद तत्काल ही इस प्रकार अचानक आई हुई इस आपत्तिसे नया सेनापति अश्वघोष उलझनमें पड गया। नया महामात्य विघ्नगुप्त भी कुछ गभीर विचारणामें निमग्न हो गया।

राज सभाका वातावरण सर्वथा शून्य-सा हो रहा था। युद्ध करनेका शौर्य या पराक्रम उस समय किसी भी अधिकारीके चेहरे परसे प्रकट नहीं हो रहा था, महाराजा नद भी यह सब समझ चुके थे। अत उन्होंने बडी ही

चतुराईके साथ दूतसे कहा - "तुम्हारे और हमारे बीच आजतक बहुत ही शुद्ध एव मित्रतापूर्ण व्यवहार रहता आया है और उसे बनाये रखनेको हम आतुर हैं। अत युद्ध करनेकी शत्रु-भावनाका इसमें कहीं स्थान ही नहीं होना चाहिए। हमारे महामात्य वृद्धावस्थाके कारण इस समय रोग शय्यापर हैं फिर भी आपलोगोंके साथ सुलह-समझौता करनेको हम सब तरहसे तैयार हैं।"

दूतको नन्दके इन शब्दोंमें मगधके सत्ताधीशकी निर्बलता जान पडी। उसे इस बातकी कल्पना तक नहीं थी कि सर्वतन्त्र स्वतन्त्र माना जानेवाला सम्राट् इतना नम्र होकर उत्तर देगा। उसने देखा कि कल्पकके नामपर यह समय टालनेकी एक युक्ति ही है। अत. दमनका प्रयोग किये विना किसी प्रकार भी कार्य सिद्धि नहीं हो सकती। इस बातको उस चालाक दूतने भली भाँति समझ लिया।

अत 'मैं हमारे स्वामियोंसे पूछ देखता

हूँ' कहकर उस दूतने घोडा दौडा दिया। दूसरे ही क्षण उन सामुहिक राज्यकी सैनाने पाटलीपुत्रके चारों ओर घेरा डालकर नगरके लोगों का व्यवहार कठिन बना दिया। निर्दोष प्रजागण प्रतिदिन इस प्रकार आपत्तिके गहरे भँवरमें गोते खाने लगे।

महाराजा नन्दने उस आक्रमणका सामना करनेके लिए अपने नये मन्त्रीमण्डलको आदेश दिया। महामात्य विश्वगुप्तने अपनी ओरसे नकारात्मक उत्तर देते हुए कहा कि :-"अचानक उत्पन्न हुई इस परिस्थितिका सामना करनेके लिए हमारे पास इस समय शक्ति या सामर्थ्य नहीं है।" नन्दको इस अनिच्छित उत्तरसे बहुत ही दुःख हुआ।

उस समय मगध सम्राटको अपने बुद्धिशाली महामात्य कल्पकका स्मरण हुआ। उसके नेत्रोंसे गंगा-यमुनाकी धाराएँ प्रवाहित हो चलीं। महामात्य कल्पककी बुद्धि, शुभचिंतकता और उसके पराक्रम तथा वीरता पूर्ण

शासन कुशलताके ससमरण नन्दके दु खित अन्त करणको अग्निकी चिनगारीके समान जलाने लगे। अत वह स्वय कारावासकी काली कोठरीमें कल्पकसे मिलनेके लिए गया। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि जीवनकी अतिम घडियोंमें मृत्युका साहस पूर्वक सामना करता हुआ महामात्य कल्पक प्रसन्नतापूर्वक जी रहा है।

मगधका सम्राट् कल्पकके सामने झुक गया। अस्थिपजर बने हुए मन्त्रीके देहमें आत्माके अटूट धैर्यका दर्शन होते ही नदके हृदयमें मन्त्रीश्वरके प्रति रहा हुआ सद्‌भाव सहसा बढ़ चला। स्वय सम्राट् होते हुए भी सेवककी तरह वह लज्जासे नीची नजर किये देखने लगा। कल्पककी सज्जनता, सहृदयता और साधुताके प्रति उसे पूर्ण विश्वास था। अत क्षणभर मौन रहनेके बाद नन्दने कहा -

"प्रिय महामात्य! मगधके सत्ताधीश अथवा मगधके साम्राज्यकी लाज रखनेके लिए

आज मैं तुम्हारे पास भीख माँगने आया हूँ। अतएव अब कलतकके शत्रुभावको भूलकर मगधके शत्रुओंका सामना करनेके लिए तैयार होनेकी स्थिति हमारे सामने अनिवार्य सी है।"

'मेरे मत्रीश्वर ! तुमपर हमने अन्यायोकी लगातार झडी-सी लगादी है और उसी पापका प्रायश्चित इस समय हम भोग रहे हैं। मगधकी सत्ताके विरुद्ध गणराज्योंने आज खुल्लम खुल्ला विद्रोह खडाकर दिया है। अत तुम जैसे महान् पुण्यवान् मत्रीश्वरके आत्मबलपर अभी भी हमें पूर्ण विश्वास है कि, हम अपनी डगमगाती सत्ताको अचल बनाकर मगध राज्य के सिंहासन पर नदवशकी विजय ध्वजा फहरा सकेंगे।"

कल्पककी सज्जनता अपने स्वामीके मुखसे इन शब्दोंको सुनते ही अकुला उठी। क्षणभरके लिए वह अपने मस्तक पर बिजली प्रवाहित होनेकी तरह मूढ एव स्तब्ध रह गया। क्षणभरमें ही उसके मुखसे जो शब्द उच्चारण

हुए, उनमें पर्वतको विदीर्ण करने जैसा शौर्य था। उसकी वाणीके प्रवाहने विद्युत शक्तिको स्तभित कर दिया। उसकी शब्द गगामें हृदयका सच्चा सेवक-भाव और स्वामीके प्रति वात्सल्य उभर रहा था।

उसने दो शब्दोंमें कह दिया—'राजन्! मगधके सम्राटकी सेवा ही मेरा जीवन व्रत था और आज भी है। श्रीजिनेश्वरके समान तारक परमात्माका सेवक समझा जानेवाला कल्पक रक्तका एक बिन्दु शेष रहने तक मगध-साम्राज्यके प्रति स्वामि भक्त ही रहेगा। ससारके कोई प्रलोभन कल्पककी वफादारी के सामने नहीं आया और न आगे ही कभी वह सामने आ सकता है। अत आप निश्चिन्त रहे।

षष्ठम परिच्छेद

अगले दिनके सवेरेसे ही वातावरण वदल गया। महामात्यके साथ महाराजा, पाटलीपुत्रके प्रत्येक चौराहे पर घूम गये। नगर-नायक

महामात्यको देखकर स्वस्थ हो गये। जनता अपने दु खोंको भूल गई। नगरके वातावरणमें आकस्मिक परिवर्तन हो चला। प्रकाशकी तेजस्वी किरणोंके समान महामंत्रीश्वरके आगमन से नागरिकोंके हृदय आनन्दसे उत्साह पूर्ण होगये। अधीरता, शोक और शून्यताकी अधकारपूर्ण आँधी बिखर गई।

दुर्गपर चढ़कर मंत्रीश्वरने नगरको घेर लेनेवाली गण राज्योंकी सेनाको देखा और समाधानीका सदेश उसने स्वय ही भिजवाया और राज्य के अधिकारियोंने मंत्रीश्वरके नामपर श्वेत ध्वजा आकाशमें फहरा दी। उधर गणराज्यके प्रतिनिधियोंने भी यह सब देख लिया। व्यर्थ ही रक्त बहानेकी अपेक्षा मगधकी सत्ताको इस निर्बलताके अवसर पर सन्धि या सुलहके शस्त्र से दवा देनेमें ही उन लोगोंने अपनी बुद्धिमत्ता समझी।

गणराज्योंके मुख्य सेनापति इस अवसरसे लाभ उठानेके लिए पहलेसे ही सावधान थे।

उसने प्रतिनिधि मडलसे कह दिया कि, "यदि समझौतेके द्वारा यह विषय समाप्त हो जाता है तो क्यों व्यर्थके लिए रक्तकी नदी बहाई जाय ?" इसपर सभी एक मत हो गए। गरम और नरम दोनो ही दलोंके नायकोंने भद्रवीर्य को महामात्य कल्पकके साथ वार्तालाप करने की अनुमति देदी। फलत महामात्य कल्पकने पूरी तैयारीके साथ नगरका मुख्य द्वार खोल दिया। भद्रवीर्य नगरमें आया और मन्त्रीश्वरकी अद्भुत प्रतिभा, भव्यललाट एव देवाशी तेजको देखकर वह एकदम उसके सन्मुख झुक गया।

मन्त्रीश्वरने अपने पास बैठाकर उस युवा सैनापतिका पूर्ण सत्कार किया। इससे भद्रवीर्यकी सारी अकड दूर हो गई। थोडी देरमें वहाँ परस्पर प्रेमका वातावरण फैल गया। हिंसाकी पाशवी वृत्तिके सन्मुख जैन महामात्य कल्पककी निर्दोष अहिंसकताकी विजय हुई।

"बन्धु भद्रवीर्य! नम्रतापूर्वक मन्त्रीश्वरने

कहा, 'आपसब गण-राज्यवाले भले ही मानते हों कि मगधकी सत्ताका परिबल समाप्त हो चुका है, किंतु यह आप सबका केवल भ्रम ही है।' इस प्रकार मंत्रणाके लिए मगधकी आतुरताका कारण स्पष्ट करते हुए कल्पकने अपने एक विशेष ढंगसे स्पष्टीकरण किया।

"महाराजा नंद और मैं, यह मानते हैं कि हिंसाके द्वारा जगतपर विजय प्राप्त की जा सकनेकी धारणा अज्ञानपूर्ण है। सत्तावाद या साम्राज्यकी भूख पापोंको जन्म देकर समस्त संसारको पापी बना देती है। इसीलिए हमें सत्ताकी भूख या लालसा रंचमात्र भी नहीं है। हमारा धर्म-सिद्धान्त स्पष्ट शब्दोंमें बोध कराता है कि 'सत्ता या समृद्धि केवल पुण्य-बलसे ही प्राप्त हो सकती हैं'। अतः इसके लिए लाखों-करोड़ों या अर्बों की संख्यामें मानवोंका संहारकर शोणितका सागर निर्माण करना हमारे मतानुसार भयंकर अन्याय, अधर्म है और शक्तिका दुरुपयोग या अपव्यय है।'

उसने प्रतिनिधि-मडलसे कह दिया कि, "यदि समझौतेके द्वारा यह विषय समाप्त हो जाता है तो क्यों व्यर्थके लिए रक्तकी नदी वहाई जाय ?" इसपर सभी एक मत हो गए। गरम और नरम दोनों ही दलोंके नायकोंने भद्रवीर्य को महामात्य कल्पकके साथ वार्तालाप करने की अनुमति देदी। फलत' महामात्य कल्पकने पूरी तैयारीके साथ नगरका मुख्य द्वार खोल दिया। भद्रवीर्य नगरमे आया और मत्रीश्वरकी अद्भुत प्रतिभा, भव्यललाट एव देवांशी तेजको देखकर वह एकदम उसके सन्मुख झुक गया।

मत्रीश्वरने अपने पास वैठाकर उस युवा सैनापतिका पूर्ण सत्कार किया। इससे भद्र-वीर्यकी सारी अकड दूर हो गई। थोडी देरमें वहाँ परस्पर प्रेमका वातावरण फैल गया। हिंसाकी पाशवी वृत्तिके सन्मुख जैन महामात्य कल्पककी निर्दोष अहिंसकताकी विजय हुई।

'वन्धु भद्रवीर्य। नम्रतापूर्वक मत्रीश्वरने

कहा, 'आपसब गण-राज्यवाले भले ही मानते हों कि मगधकी सत्ताका परिबल समाप्त हो चुका है, किंतु यह आप सबका केवल भ्रम ही है।' इस प्रकार मंत्रणाके लिए मगधकी आतुरताका कारण स्पष्ट करते हुए कल्पकने अपने एक विशेष ढंगसे स्पष्टीकरण किया।

"महाराजा नंद और मैं, यह मानते हैं कि हिंसाके द्वारा जगतपर विजय प्राप्त की जा सकनेकी धारणा अज्ञानपूर्ण है। सत्तामद या साम्राज्यकी भूख पापोंको जन्म देकर समस्त संसारको पापी बना देती है। इसीलिए हमें सत्ताकी भूख या लालसा रंचमात्र भी नहीं है। हमारा धर्म-सिद्धान्त स्पष्ट शब्दोंमें बोध कराताहै कि 'सत्ता या समृद्धि केवल पुण्य बलसे ही प्राप्त हो सकती है'। अतः इसके लिए लाखों करोड़ों या अबो की संख्यामें मानवोंका संहारकर शोणितका सागर निर्माण करना हमारे मतानुसार भयंकर अन्याय, अधर्म है और शक्तिका दुरुपयोग या अपव्यय है।'

भागीदार मानकर यहाँ अत्यत सम्मान पूर्वक आमन्त्रित किया है।'

इस प्रकार मत्रीश्वरकी वाणीका तेज-प्रकाश चारों ओर फैल गया। शून्यवत् होकर भद्रवीर्य यह सब सुनता रहा। अपने जीवनमें उसने यह सब पहली बार ही सुना था। अत अपनेको धन्य मानता हुआ वह फिर भी मगधके उन महान् एव कार्य कुशल मत्रीकी ओर देखता ही रहा।

'सेनाधिपति! मगधकी सत्ताके साथ स्थायी सुलह-सधि और शाति परस्पर विश्वास इसी मार्गसे सुरक्षित रह सकेगा। साथ ही यह भी स्मरण रखोकि समूह राज्य और हम सब एक सरीखे ही हैं। तुम्हारे आत्म-सम्मानके अधिकारको कुचल देनेका हमें कोई अधिकार नहीं है और ऐसा करनेका अभिमान भी हमने मनमें नहीं रखा है।'

"इतने पर भी यदि रक्तपातके द्वारा हमसे सत्ता छीन लेनेका ही तुम लोगोंका इरादा हो

तो उसके लिए भी हम तैयार हैं। हमारे पास भी सेना है, शक्ति है और कुवेरका धन भण्डार भी भरा हुआ है। हमारा विश्वास है कि जिस पुण्यबलसे कलतक नापित (नाई) माने गये वेश्या-पुत्र नंदको मगधका राजसिंहासन प्राप्त हुआ है। वहीं पुण्य नंदकी सहायता करनेको आज भी जीवित है। अत जैसा भी उचित जान पड़े वह निर्णय करलो।"

महामंत्रीके शब्दोंसे अग्निकी चिनगारियाँ सी झड़ रही थीं। तब मौन भंगकर सेनापति भद्रवीर्यने कहा-- "युद्धका निश्चय त्यागकर हम आपकी शरणमें आये हैं। आप जैसे देव पुरुषके शब्दों पर हमें पूर्ण विश्वास है।"

साराश, उसी समय शांति-समाधान हो गया। भद्रवीर्यने छावनीमें आकर युद्ध बन्द करनेकी घोषणा करदी। सेनाएँ यथा स्थान भेज दी गईं। दूसरे ही दिन पाटली पुत्र परसे घेरा उठा लिया गया। तत्काल ही नगर भय मुक्त हो गया। भद्रवीर्यके इस प्रकार अचा-

नक ही हृदय-परिवर्तनसे गणराज्यों में परस्पर विश्वास भग हो गया। सेनाधिपति पर देशद्रोहका आरोप वातावरणमें व्याप्त होगया। फिर भी सिन्ध, सौवीरके राजा भद्रवीर्य पर अपने विश्वास कायम रखते हुए श्रद्धापूर्वक युद्धसे विरत हो गए। अन्य छोटे-छोटे राज्य भी अपनी निर्बलताके कारण भाग चले। मगधकी सत्ता पर घुमडते हुए भयके बादल मत्रीश्वरके पुण्य-प्रतापसे इस प्रकार अचानक बिखर गये।

इस प्रकार जैन मत्रीश्वर कल्पकके अद्भुत व्यक्तित्वके प्रभावसे महाराजा नदकी सत्ता मगधके राज्य सिंहासन पर पुन सुस्थिर होगई और महामत्रीके विरुद्ध षड्यत्र रचानेवाले तत्वोंको नन्दने मगधकी सीमासे निर्वासित कर दिया। उनके पापकर्मों का भडा फोड हो गया। मगध-देशके विशाल राज्यतत्रकी व्यवस्थाके कलशसे महामात्य कल्पकके मस्तक पर पुन गौरव पूर्वक अभिषेक हो गया।

किंतु साधुमूर्ति कल्पकको अब उसकी अपेक्षा नहीं रह गयी थी। अत राज्य, देश या जगत सभी सम्बन्धोंसे मुक्त होकर उस महामत्रीने अपना शेष जीवन श्री वीतरागधर्म की आराधनामें पूर्ण किया।

अतमें समाधि पूर्वक मृत्युको प्राप्तकर धर्मात्मा कल्पक देवलोकको प्रयाण कर गये। उसके बाद कल्पकके उत्तराधिकारी मगधके महामत्रीके पद पर महाराजाके हाथोंसे अभिषिक्त हुए। मगधकी सर्वसत्ताके वाहकके रूपमें सात सात सिंहासनों तक जैन मन्त्रीश्वर कल्पककी पीढ़ियोंने मन्त्रीश्वर पद सत्यनिष्ठा पूर्वक निभाते हुए जैनधर्मको गौरवान्वित किया, और जिससे नदवशकी विजय-ध्वजा देशविदेशमें दिगन्त व्यापी हो गई।

बीचमें नदवशकी तीसरी पीढ़ीमें थोडा सा सघर्ष भी हुआ। उस समय राजसत्ताका तत्र महर्षि स्थूल भद्रजीके पिता जैन मन्त्रीश्वर शकटालके हाथमें था। उस समय असन्तुष्ट

नक ही हृदय परिवर्तनसे गणराज्यों में परस्पर विश्वास भग हो गया। सेनाधिपति पर देशद्रोहका आरोप वातावरणमें व्याप्त होगया। फिर भी सिन्ध, सौवीरके राजा भद्रवीर्य पर अपने विश्वास कायम रखते हुए श्रद्धापूर्वक युद्धसे विरत हो गए। अन्य छोटे-छोटे राज्य भी अपनी निर्बलताके कारण भाग चले। मगधकी सत्ता पर घुमडते हुए भयके बादल मन्त्रीश्वरके पुण्य प्रतापसे इस प्रकार अचानक बिखर गये।

इस प्रकार जैन मन्त्रीश्वर कल्पकके अद्भुत व्यक्तित्वके प्रभावसे महाराजा नदकी सत्ता मगधके राज्य सिंहासनपर पुन सुस्थिर होगई और महामन्त्रीके विरुद्ध षड्यन्त्र रचानेवाले तत्वोंको नन्दने मगधकी सीमासे निर्वासित कर दिया। उनके पापकर्मों का भडा फोड हो गया। मगध-देशके विशाल राज्यतन्त्रकी व्यवस्थाके कलशसे महामात्य कल्पकके मस्तक पर पुन गौरव पूर्वक अभिषेक हो गया।

किंतु साधुमूर्ति कल्पकको अब उसकी अपेक्षा नहीं रह गयी थी। अतः राज्य, देश या जगत सभी सम्बन्धोंसे मुक्त होकर उस महामंत्रीने अपना शेष जीवन श्री वीतरागधर्म की आराधनामें पूर्ण किया।

अंतमें समाधि पूर्वक मृत्युको प्राप्तकर धर्मात्मा कल्पक देवलोकको प्रयाण कर गये। उसके बाद कल्पकके उत्तराधिकारी मगधके महामंत्रीके पद पर महाराजाके हाथोंसे अभिषिक्त हुए। मगधकी सर्वसत्ताके वाहकके रूपमें सात सात सिंहासनों तक जैन मंत्रीश्वर कल्पककी पीढ़ियोंने मंत्रीश्वर पद सत्यनिष्ठा पूर्वक निभाते हुए जैनधर्मको गौरवान्वित किया, और जिससे नंदवंशकी विजय-ध्वजा देश-विदेशमें दिगन्त व्यापी हो गई।

बीचमें नंदवंशकी तीसरी पीढ़ीमें थोडा सा संघर्ष भी हुआ। उस समय राजसत्ताका तंत्र महर्षि स्थूल भद्रजीके पिता जैन मंत्रीश्वर शकटालके हाथमें था। उस समय असन्तुष्ट

मानवोंकी उकसाहटसे तृतीय नद भडक उठा और शकटाल मत्रीश्वरको राजद्रोहकी गधसे अपमानित किया। उस अपमानित मत्रीश्वरने अपने परिवारकी सुरक्षाके लिए स्वेच्छासे ही प्राण त्याग दिये, किंतु उसी 'काल' के चौघडिये (मुहूर्त) से नदवशके सर्वनाशका बीजारोपण आरभ हो गया।

अपमानित ब्राह्मणमत्रीका वैर ब्राह्मणकुल के जैन-मत्रीश्वर चाणक्यने नन्दवशकी लताको मगधके सिंहासन परसे उखेड कर नवम नदके समयमें उसे हथिया लिया और उसके पश्चात् मगधके सिंहासन पर चन्द्रगुप्त द्वारा मौर्यवशकी स्थापना हुई।

चन्द्रगुप्तके पश्चात् बिन्दुसार, अशोक और जैन सम्राट्* सम्प्रति आदि सभी मौर्य वशीय मगध सम्राट् इतिहासके पृष्ठोंमें अकित हो गये। साराश जिस प्रकार मगधकी शासन सत्तापर अधिष्ठित करनेका पुरुषार्थ जैन मत्री-

* राजा सम्प्रतिका चरित्र हमारे यहाँ मिलता है।

श्वर कल्पकने दिखलाया, उसी प्रकार मगधके सिंहासन पर मौर्यवंशको सुस्थिर करनेवाले ब्राह्मण कुलके जैनमंत्रीश्वर चाणक्यका नाम भी इतिहासमें प्रसिद्ध है।

जैन इतिहासकी ये सब प्रामाणिक घटनाएँ हमें आजतक इस रूपमें प्राप्त हो रही हैं। ब्राह्मण कुलके जैन मंत्रीश्वर श्री कल्पककी कथाका इतिहास हमें इस प्रकारका अपूर्व धर्म सन्देश सुनाता है कि 'निर्मल साधुता, निर्दोष धीरता, अद्‌भुत आत्म सन्तोष' ये तीनों शक्तियाँ ही कल्पकके जीवनकी बहुमूल्य संपत्ति रही हैं। कल्पकके जीवनका यह संक्षिप्त इतिहास हमें इन्हीं महान् शक्तियोंका प्रभाव भलीभांति बोध कराता है।

'वैर या शत्रुताके विषसे अचेत हो जाने वाली एवं संहारकी आतिशबाजी (अग्नि-लीला) के साथ क्रीडा करनेमें ही स्वार्थ-सिद्धि को देखनेवाली आधुनिक सभ्य नामधारी मानव जातिको मंत्रीश्वर कल्पकके जीवनसे यह उप-

मानवोंकी उकसाहटसे तृतीय नद भडक उठा और शकटाल मत्रीश्वरको राजद्रोहकी गधसे अपमानित किया। उस अपमानित मत्रीश्वरने अपने परिवारकी सुरक्षाके लिए स्वेच्छासे ही प्राण त्याग दिये, किंतु उसी 'काल' के चौघडिये (मुहूर्त) से नदवशके सर्वनाशका बीजारोपण आरभ हो गया।

अपमानित ब्राह्मणमत्रीका वैर ब्राह्मणकुल के जैन मत्रीश्वर चाणक्यने नन्दवशकी लताको मगधके सिंहासन परसे उखेड कर नवम नदके समयमें उसे हथिया लिया और उसके पश्चात् मगधके सिंहासन पर चन्द्रगुप्त द्वारा मौर्यवशकी स्थापना हुई।

चन्द्रगुप्तके पश्चात् बिन्दुसार, अशोक और जैन सम्राट्* सम्प्रति आदि सभी मौर्य वशीय मगध सम्राट् इतिहासके पृष्ठोंमें अकित हो गये। साराश जिस प्रकार मगधकी शासन सत्तापर अधिष्ठित करनेका पुरुषार्थ जैन मत्री-

* राजा सम्प्रतिका चरित्र हमारे यहाँ मिलता है।

श्वर कल्पकने दिखलाया, उसी प्रकार मगधके सिंहासन पर मौर्यवंशको सुस्थिर करनेवाले ब्राह्मण कुलके जैनमंत्रीश्वर चाणक्यका नाम भी इतिहासमें प्रसिद्ध है।

जैन इतिहासकी ये सब प्रामाणिक घटनाएँ हमें आजतक इस रूपमें प्राप्त हो रही हैं। ब्राह्मण कुलके जैन मंत्रीश्वर श्री कल्पककी कथाका इतिहास हमें इस प्रकारका अपूर्व धर्म सन्देश सुनाता है कि 'निर्मल साधुता, निर्दोष धीरता अद्भुत आत्म सन्तोष' ये तीनों शक्तियाँ ही कल्पकके जीवनकी बहुमूल्य संपत्ति रही हैं। कल्पकके जीवनका यह संक्षिप्त इतिहास हमें इन्हीं महान् शक्तियोंका प्रभाव भलीभाँति बोध कराता है।

"वैर या शत्रुताके विषसे अचेत हो जानेवाली एवं संहारकी आतिशबाजी (अग्नि लीला) के साथ क्रीडा करनेमें ही स्वार्थ-सिद्धि को देखनेवाली आधुनिक सभ्य नामधारी मानव जातिको मंत्रीश्वर कल्पकके जीवनसे

देश भली-भाँति हृदयगम करलेने की परम आवश्यकता है। इसके विना मानव कुलका उद्धार किसी भी प्रकार सम्भव नहीं, यह अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिए।

मन्त्रीश्वर कल्पककी साधुता की जय !

समाप्त

हमारी उत्तमोत्तम सरल सुन्दर सचित्र पुस्तकें

पुस्तक			मूल्य
नेमिनाथ चरित्र	रेशमी	जिल्द	१०)
आदिनाथ चरित्र	,,	,,	८)
शान्तिनाथ-चरित्र	,		८)
पार्श्वनाथ-चरित्र	,	,	८)
राजा श्रेणिक	,	,,	७)
राजा सम्प्रति	,,	,,	७)
चन्दराजा	,,	,,	७)
श्र० ग प्र० पञ्च प्रतिक्रमणसूत्र			६)
श्रीपाल-चरित्र	रेशमी	जिल्द	५ ५०
वीर अम्बड	,	,,	४)
उत्तम कुमार	,,	,,	४)
राजा मनोहर	,	,	४)
वीरपाल चरित्र	,		४)
शुकराज कुमार	,	,	२)
नल-दमयन्ती			१ ५०
राजा प्रियवर			१ ५०
जम्बूस्वामी			१ ५०
हरिबल मच्छी			१ ५०
मुनिपति चरित्र			१ ५०
अभय कुमार			१ ५०

पुस्तक	मूल्य
चन्दनबाला	१ ३८
रतिसार कुमार	१ २५
राजा हरिश्चन्द्र	१ २५
पर्यूषणपर्वमाहात्म्य	१ २५
द्रौपदी	१ ००
सुरसुन्दरी	१ ००
स्थूलभद्र मुनि	१ ००
कलावती	७५
चम्पक सेठ	७५
जय विजय	७५
राजर्षि प्रसन्नचन्द्र	७५
सुदर्शन सेठ	७५
अञ्जनासुन्दरी	७५
कयवन्ना सेठ	७५
विजयसेठ विजयासेठानी	७५
रत्नसार कुमार	७५
तरह काठिये	७५
ललितांग कुमार	७५
काम-कुम्भ माहात्म्य	७५
सती सीता	७५

मन्त्रीश्वर कल्पक	७५	कामदेव श्रावक	
सती द्रौपदी	६३	रत्नहारा	
अरणिक मुनि	५०	रत्नशिखर	
आनन्द श्रावक	५०	सती राजीमती	)
नमस्कार मन्त्र माहात्म्य	५०	महासती मृगावती	५
कूर्मा पुत्र	५०	सुरादेव श्रावक	१।
इलायची कुमार	५०	नन्दिनीप्रिय श्रावक	१८
महाशतक श्रावक	५०	अतिमुक्त कुमार	१८
माता देवानन्दा	५०	ज्ञान पञ्चमी माहात्म्य	१८
ब्राह्मी-सुन्दरी	५०	कुण्डकोलिक श्रावक	२५

प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

तरंगवती तरंगलोला	— प्रेसमें	त्रिशला माता —	प्रेसमें
भरतेश्वर बाहुबली	— प्रेसमें	होलिका पर्व —	प्रेसमें
अनाथी मुनि	— प्रेसमें	मेघकुमार चरित्र —	प्रेसमें
नूपुर पण्डिता	— प्रेसमें	अमर कुमार (नाटक)	प्रेसमें
मुनि सुव्रतस्वामी	— प्रेसमें	कार्तिक पूर्णिमा माहात्म्य	प्रेसमें
तिलक मंजरी	— प्रेसमें	देवद्रव्य —	प्रेसमें
षट्पुरुष चरित्र	— प्रेसमें		
नाभाक राज चरित्र	— प्रेसमें	महाबल	

पता —पण्डित [illegible]

पो० कम्बोरा (उदयपुर-[illegible]